एक प्रति १० रुपए * वार्षिक १०० रुपए

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

जून २००६ * वर्ष ५६ * अंक ६

सम्मेलन के आगामी सत्र के नव-निर्वाचित सभापति

श्री सीताराम शर्मा

50-60 YEARS OF EXCELLENCE IN QUALITY PRODUCTS

PRABHAT MARKETING CO. LTD.

4, Synagogue Street
2nd Floor, Room No. 201
Kolkata - 700001
Ph : 033-2242-2585/4654 55252587
E-mail rohitashwaj@hotmail.com
Website : www.jalangroup.net

AUTHORISED DISTRIBUTORS OF

FINOLEX INDUSTRIES LTD.

FOR

Sanitation & Plumbing Systems
Agricultural PIPES & FITTINGS

D-1/10, MIDC. CHINCHWAD
PUNE - 411019
www.finolex.com

इस अंक में

अनुक्रमणिका-	३
जनवाणी	४
२०वें राष्ट्रीय अधिवेान की सूचना-	५
विवेकानंद की वाणी-	६
सम्पादकीय-	७
अध्यक्ष की कलम से/श्री मोहनलाल तुलस्यान	९
नव-निर्वाचित अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा का जीवन परिचय	१०
सम्मेलन से जुड़े बीते दिनों की यादें/श्री सीताराम शर्मा	११
अखिल भारतीय समिति की बैठक एवं नए सभापति का निर्वाचन	१२-१७
सामूहिक विवाह पद्धति/विसंगतियों को समझना	
आवश्यक है/श्री हनुमान सरावगी	१८
टी.वी. या टी.बी./श्रीमती आशारानी लखोटिया	१९
नई और पुरानी पीढ़ी के बीच सेतु की जरूरत/श्री गौरीशंकर कायां	२०
भामाशाह/श्री जुगल किशोर जेथलिया	२१-२२

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक में सभापति का निर्वाचन रिपोर्ट सहित आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, महिला सम्मेलन, युवा मंच आदि की रिपोर्टें।

२३-२६

समाज विकास
जून, २००६
वर्ष ५६, अंक ६
एक प्रति- १० रु.
वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोन-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।
संपादक : नंदकिशोर जालान

जनवाणी

इस स्तंभ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित हैं।

-सम्पादक

नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा के प्रति बधाई एवं शुभकामनाएं

Please accept my heartiest Congratulations on your being elected as the National President of the All India Marwari Federation. I am confident that under your leadership the basic cause for which the sammelan was formed i.e., for social reform will get a boost.

-G.P. Agarwal, C.A., Kolkata.

Congratulations

-Sundeep Bhutoria, Kolkata

दिनांक १३.६.२००६ को नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय समिति की बैठक में आगामी सत्र के लिए आप सर्वसम्मति से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति निर्वाचित किए गए, एतदर्थ मेरी बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका सुयोग्य एवं कुशल नेतृत्व समाज को एकता के सूत्र में पिरोकर राष्ट्र को जाग्रत कर सम्मेलन को एक नई दिशा प्रदान करेगा इसी आशा के साथ।

-आत्मा राम तोदी, कोलकाता

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि नागपुर अधिवेशन में आपको सन् २००६-०७ के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। मैं अपनी ओर से एवं रानीगंज शाखा की ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है आपके कुशल नेतृत्व में समाज को नई दिशा मिलेगी, युवा वर्ग में नवजागरण होगा, समाज सुधार की दिशा में आपका नेतृत्व मील का पत्थर सिद्ध होगा एवं समाज को एक सूत्र में बाँधने का कार्य दृढ़ होगा। मई अंक में समाज-विकास में लिखित आपकी पंक्तियाँ- समाज में शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, कला, विज्ञान, खेलकूद आदि क्षेत्रों में स्थापित व्यक्तियों को प्रोत्साहित, सम्मानित एवं प्रतिष्ठित करना होगा अब सार्थक सिद्ध होगी।

आशा है मारवाड़ी सम्मेलन को दृढ़ता प्रदान करने में आपका नेतृत्व अंगद के पाँव सिद्ध होंगे।

-राम गोपाल खेतान, संयुक्त सचिव, पं.बंग. प्रा.मा. सम्मेलन, रानीगंज शाखा।

From the papers it came to my knowledge that you have been selected as the National President of Marwari Sammelan besides being Honorary Consul of Belarus and so many other institutions. I also came to know that you are the 16th President and will take over in the end of July 2006. Many congratulations on this joyous and noteworthy occasion.

-Arun Kumar Jalan, Kolkata

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किए जाने पर हम सबकी हार्दिक बधाइयाँ व शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

हमारा विश्वास है कि आपके कुशल नेतृत्व में सम्मेलन द्वारा उच्च मानकों के अनुरूप, समाज के विकास की दिशा में विशेष पहल की जाएगी। अपनी समस्त शुभकामनाएँ ज्ञापित करते हुए हम यह विश्वास दिलाना चाहेंगे कि मारवाड़ी समाज और राष्ट्र के विकास के लिए हम सब लोग कृत संकल्पित हैं और ऐसे प्रत्येक कार्य में अपनी सर्वश्रेष्ठ सेवायें देने के लिए प्रतिबद्ध भी। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आपको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति, सफलता एवं प्रसन्नता प्रदान करता रहे।

-अनिल के. जाजोदिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति के सर्वोच्च पद पर आपके सर्वसम्मत निर्वाचन पर मुझे अपार खुशी हो रही है। अतीत में आपने सम्मेलन के जिस पद को सम्हाला उसे निखारा और उस पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। अपने ७१ वर्ष के इतिहास में सम्मेलन ने संघर्ष और सहयोग की एक लम्बी यात्रा तय की है। आज आवश्यकता है ऐसे जुझारू नेतृत्व की जो सम्मेलन को नई दिशा देते हुए भावी चुनौतियों का सामना कर सकें। यह बीड़ा जो व्यक्ति उठा सकता है उसका नाम है- श्री सीताराम शर्मा। आपकी चुनौती भरी यात्रा में हमें हमेशा अपने पास पायेंगे।

-विश्वनाथ सराफ, अध्यक्ष, रानीगंज शाखा अ.भा.मा.स.

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-७ ३० जून , २००६

सूचना

सम्मेलन के सभी सदस्यों की सेवा में

२०वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन, भुवनेश्वर, ५-६ अगस्त, २००६

प्रिय महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का आगामी **२०वां राष्ट्रीय अधिवेशन** उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सौजन्य एवं आतिथ्य में ५-६ **अगस्त**, २००६ को **होटल स्वास्ति प्लाजा, भुवनेश्वर** में सम्पन्न होगा।

अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान करेंगे एवं इस अधिवेशन में नव-निर्वाचित सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा पदभार ग्रहण करेंगे।

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

विचारार्थ विषय :

(१) सम्मेलन के विगत कार्यकाल का प्रतिवेदन
(२) पिछले कार्यकाल का आय-व्यय एवं संतुलन पत्र को प्रस्तुत करना
(३) सभापति के अलावा अन्य पदाधिकारियों का चुनाव
(४) अन्य विषय- जो अखिल भारतीय समिति/कार्यकारिणी समिति द्वारा अनुप्रेषित हो या सभापति की स्वीकृति से पेश किया जाये।

भवदीय
भानीराम सुरेका
(भानीराम सुरेका)
मानद् राष्ट्रीय महामंत्री

नोट : कृपया अपने पहुंचने की अग्रिम सूचना राष्ट्रीय कार्यालय के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रांतीय पदाधिकारियों को प्रेषित करें, जिससे प्रबन्ध व्यवस्था समुचित रूप से हो सके :-

(१) **श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया**, अध्यक्ष, उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, बी ४०, शहीद नगर, भुवनेश्वर, ७५१००७, फोन : ०६७४-२५४५०९९/२५४६०९९, फैक्स : ०६७४-२५४५००९, मो. : ९४३७००६००९
(२) **श्री शिव कुमार अग्रवाल**, प्रांतीय महामंत्री, फोन नं. : ०६७४-२५७५४३७/२५७५७२३, मो. : ९४३७०१५४३७

मुक्त जीवन का रहस्य

स्वामी विवेकानन्द

तुम ईश्वर की सन्तान हो। अमृत के अधिकारी हो। तुम पवित्र एवं पूर्ण हो। तुम ही एकमात्र इस मर्त्य भूमि के भगवान हो! क्या तुम पापी हो? यह तो कदापि सम्भव नहीं? मानव को पापी कहना तो स्वयं पाप है। विशुद्ध मानवात्मा तो सत्-चित-आनन्द के तत्वों से परिपूर्ण रहता है। तुम सिंह स्वरूप होकर अपने को क्यों एक क्षुद्र, निस्सहाय मेमना समझते हो? अपने भ्रम का परदा हटा दो। तुम तो जरा-मरण रहित, मुक्त और नित्यानन्दमय आत्मा हो। तुम जड़ नहीं हो! तुम देह नहीं हो। स्थूल जड़ तत्व तो तुम्हारा अनन्य दास है, तुम उसके दास नहीं हो।

वेद में कहा है- ''आत्मा तो ब्रह्मस्वरूप है।'' वह तो निमित्त मात्र पंचभूतों के बंधन में बँधा हुआ रहता है। जब वह बंधन रहित हो जाता है, तब वह अपने पूर्ववत् पूर्णत्व को प्राप्त कर लेता है। इस अवस्था को मुक्ति कहते हैं। ईश्वर की असीम कृपा के बिना आत्मा इन बंधनों से मुक्ति पा नहीं सकता।

जिस समय जीव अखिल चराचर के साथ तादात्म पा लेता है, उसमें विलीन हो जाता है, उस समय वह वास्तव में जीवन का अनुभव लेता है। परन्तु जब वह अपने को क्षुद्रता के संकुचित घेरे में आबद्ध कर लेता है, तब वह मृत्यु को आलिंगन करता है।

सम्पादकीय

सामाजिक समस्याओं का सत्य

नन्दकिशोर जालान
निवर्तमान अध्यक्ष

''इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावे दीन्महती विनिष्ट:।''

उपनिषद् की यह उक्ति इस बात के महत्व को प्रतिपादित करती है कि परम सत्य को तत्काल जान लेने की उपयोगिता सर्वोपरि है, अन्यथा बड़ा अनर्थ हो सकता है। इसी प्रकार समाज व सामाजिक जीवन संबंधी यथार्थ को शीघ्र से शीघ्र जान-पहचान लेने की अनिवार्यता की आवश्यकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है वरना समाज का अनिष्ट दूर नहीं होता।

सामाजिक न्याय याने सुधार की बात हम समझ रहे है तो भी मानसिक तौर पर हमारा मानस उसे स्वीकारने में, उसे अपने जीवन में उतारने में, तैयार नहीं। यह वही बात हुई कि स्वादिष्ट व्यंजनों से भरी,व परोसी हुई थाली के सामने बैठा व्यक्ति उसे छूने, उसके रस के स्वाद का आनंद लेने से कतराता हो।

उस यथार्थ को, उस समस्या को, उस अप्रिय सत्य को, जो वास्तव में मौजूद है, नकारना और उस ओर से आँख मूंद भक्त बन बैठना बहुत सीधा, बहुत सरल है। लेकिन नेत्र मूंद लेने से न तो वह समस्या ही तिरोहित हो जाती है और न उससे सामाजिक परिवेश में हो रही कठिनाइयां या चोटें ही नेस्तनाबूद हो पाती हैं।

सामाजिक समस्याओं को स्वीकारते हुए उनसे पलायन के कई छद्मपूर्ण तरीके और भी ईजाद किए हुए हैं। उनमें से एक है कि जब कभी किसी समस्या की चर्चा चलती है, तो व्यक्ति अंधाधुंध उसके सभी पहलुओं की चर्चा करने में सबसे आगे रहता है। वह आपको और सबको विश्वास दिलाने में समर्थ हो जाता है कि इस समस्या के साथ 'मनसा वाचा कर्मणा' उसकी आपके साथ पूरी सहानुभूति व आस्था है और आप मान बैठते हैं कि मौके पर उस व्यक्ति के यहां तो उस समस्या का शत प्रतिशत व सही समाधान दिखाई देगा। लेकिन वास्तविकता कुछ और ही होती है। 'मनसा वाचा कर्मणा' की वे सारी बातें शत-प्रतिशत खोखली निकलती हैं और उल्टे समाज के अन्दर की उस समस्या को थोड़ी और गहरी व गम्भीर करने में घी की आहूति देती है। उस व्यक्ति के मन की गहराई में यह भय समाया रहता है कि उसके कुनबे, इर्द-गिर्द, घूमने-फिरने वाले लोगों में उसकी जग-हसाई न हो जाये और झूठ की समतल भूमि पर खड़ी उसकी शान-शौकत का किला भरभरा कर गिर न पड़े।

समस्याओं की विवशता यह भी है कि व्यक्ति जितना उनसे भागता है, उन्हें नकारता है, उन्हें धोखा देता है, वे उसे उनसे कहीं अधिक रूप में जकड़ लेती है। वास्तव में अधिकतर समस्याएं इसलिए समस्याएं बनी रहती हैं कि व्यक्ति उनके मूल में जो तथ्य रहता है, जाने न जाने, बल्कि अधिकतर जानबूझकर, उनका स्वयं शिकार बना रहता है। व्यक्ति की स्थिति उस व्यक्ति जैसी हो जाती है जिसे कान कटने पर भगवान दिखने लगते हैं और दूसरों को अपने कान कटवा कर भगवान के दर्शन करने को कहने लगता है। भगवान के दर्शन तो कहाँ होने को हैं, कान अवश्य कटते जाते हैं। समाज की समस्याओं के घेरे को तोड़ने के लिये यह विचारणीय है व्यक्ति भगवत् दर्शन के झूठे आश्वासन के भरोसे अपने कान न कटवाता रहे, बल्कि धीर-गंभीर व अविचल भाव से उन समस्याओं के सामने खड़ा हो और उनका शिकार बनने के बजाय उन समस्याओं को ही अपना शिकार बनाकर उनके अन्याओं, उनके अत्याचारों की शक्ति को कुंठित कर दे। फिर उन्हें जन-जीवन से मिटाने में आगे बढ़े और उन समस्याओं को समाज के जीवन से निकाल फेंकने में समाज के हर व्यक्ति को सक्षम कर दे।

समस्याओं को मिटाने का साहस दुकान या फैक्टरी से तो खरीद कर लाया नहीं जा सकता। इस साहस को अपने में संजोने के बाद उसे जीवन में उतारने के समय व्यक्ति के घर-बाहर के स्वजनों, मित्रजनों, यहां तक कि उसके निजी दाम्पत्य जैसे मधुरतम संबंधों में एक बार कुछ समय के लिये दरार पड़ने की काफी संभावनाएं रहती हैं। दिल के इस दर्द को झेल लेने या इस कड़वाहट को पीने की हिम्मत में कहीं कमी आई तो बस हो चुका। सामाजिक समस्याओं का 'आपरेशन' करके इस दर्द को जीतना ही साहस का सच्चा द्योतक है। जब व्यक्ति समस्या को अपने चारों ओर कहीं भी अंगुली-टिकाव करने ही नहीं देगा, तो उसके साहस को देख अन्य अनेक समस्या को उठा दूर दे मारेंगे और शनै: शनै: समाज उस समस्या के चंगुल से छुटकारा पा जायेगा।

विगत सत्तर वर्षों में समाज ने अपने-आपको अनेक विकट और वीभत्स सामाजिक कुरीतियों की श्रृंखलाओं से विमुक्त किया है। जो इन क्रियाओं के मशालची व अगुआ बने उन्हें हमारा शतशत प्रणाम। उन्होंने वह सब भोगा जो यहां कहीं कुछ उल्लिखित है, बल्कि बहुत अधिक भोगा। उनके संजोये रास्ते की उपलब्धि का ही फल है कि गहरी कूपमण्डूकता से निकल कर पंचानबे प्रतिशत समाज स्वच्छ व स्वतंत्र वातावरण में सांस ले रहा है, उसके पथ के दोनों किनारे पुष्पित हुए हैं और अधिकाधिक पुष्पित होते जा रहे हैं।

लेकिन समस्याओं के रूप भी समय के साथ बदलते हैं। कुछ मिटती हैं, कुछ नई निर्मित होती हैं, जैसे हमारे अगुए अपने समय में नहीं झुके, दृढ़ता व साहस से उनका सामना किया, वैसे ही बचो व नई गढ़ी सामाजिक समस्याओं का मुकाबला हमें करना है।

आइये, इन समस्याओं को लिख-पढ़ लें, उन पर सर्वरूप से चिन्तन मनन कर लें। फिर उनसे जूझकर, कोरी कल्पनाओं में नहीं, बल्कि सुनियोजित पथ के पथगामी होकर बढ़ें और समाज को जकड़े हुए श्रृंखला की कड़ियों को काटते चलें।

WITH THE BEST COMPLIMENTS FROM :

A

WELL

WISHER

मित्र दृष्टि का विकास करें

मोहनलाल तुलस्यान

संसार को हम दो दृष्टि से देख सकते हैं- मित्र दृष्टि से और द्वेष-दृष्टि से, हमारे ऋषियों ने सदियों पूर्व कहा है- मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे 'शुक्लयजुर्वेद'

अर्थात्, 'हमलोग मित्र की दृष्टि से संसार को देखें', यह उपदेश की वाणी नहीं। यह युगों के अनुभव की वाणी है। जितना ही हम दूसरों से प्रेम करेंगे, दूसरों से जुड़ेंगे, उतने ही सुखी होंगे और जितना ही दूसरों को द्वेष-दृष्टि से देखेंगे, उनसे कटते जाएंगे, उतने ही दुःखी होंगे। दूसरों से जुड़ना ही प्रेम है, यह जुड़ना ही आनंद है। यहां पराया कोई नहीं, जो है अपने हैं।

जॉन वेस्ली ने लिखा है- 'छटांक भर प्रेम सेर भर ज्ञान से कहीं अच्छा है।' प्रेम ज्ञान से अच्छा तो है ही, एक अर्थ में वह स्वयं ज्ञान है तथा सच्चे ज्ञान का उद्गमस्थल है'। संत ग्रेगोरी ने भी कहा है- 'समस्त ज्ञान की उत्पत्ति प्रेम से होती है'। गेटे का कहना है- 'परिश्रम से जो काम सारी उम्र में कठिनाई से होता है, वह प्रेम के द्वारा एक क्षण में हो जाता है।' मित्रता की आंख-अर्थात् प्रेम की आंख और अमित्रता की आंख अर्थात् द्वेष की आंख, इन दोनों से ही स्वर्ग और नरक का जन्म होता है।

जब ईसा ने कहा था- 'अपने शत्रुओं से प्रेम करो तब संसार उनकी बात पर हंस पड़ा था। जब बुद्ध ने कहा- 'अक्रोधेन जयेत क्रोधम्;।' तब आस्थाहीन लोगों ने उनका उपहास किया। जब गांधीजी ने कहा- 'विरोधी के प्रति भी अहिंसक व्यवहार करो।' तब लोगों ने सूखी हंसी हंस दी। आज भी प्रेम की, क्षमा की, अहिंसा की, जीव-मैत्री की बातें करने पर लोग सिर हिला देते हैं, कहते हैं- ये सब हवाई बातें हैं।

परंतु प्रेम क्या सचमुच हवाई है। यह ठीक है कि मनुष्य में पशुता का अंश भी दिखाई पड़ता है, परंतु यह आरोपमात्र है। मनुष्य में प्रेम का अंश उससे कहीं अधिक है और यह बात इससे कहीं अधिक सत्य है कि प्रेम किये बिना मनुष्य जी ही नहीं सकता। जब तक वह प्रेम न करेगा जीवन के असली स्वरूप के दर्शन न कर सकेगा। आनंद और रस से दूर जीवन के नरक में भटकता ही रहेगा।

हम किसी को शत्रु-दृष्टि से देख सकते हैं, उससे बदला ले सकते हैं, उसे हानि पहुंचा सकते हैं परंतु ऐसा करके आनंद प्राप्त नहीं कर सकते, सुखी नहीं हो सकते, क्योंकि उसको हानि पहुंचाने के पहले हम अपने को हानि पहुंचा चुके होते हैं। अपनी आत्मा के विरुद्ध द्रोह कर चुके होते हैं।

सुकरात से उसके किसी विरोधी ने एक बार कहा था- 'यदि मैं तुमसे बदला न ले सकूं तो मर जाऊं।' सुकरात ने उत्तर दिया- 'यदि मैं तुम्हें अपना मित्र न बना लूं तो मर जाऊं।'

आज संसार नरक हो गया है। सारी विद्या, बुद्धि, प्रगति और वैज्ञानिक उपलब्धियों के होते हुए भी जीवन भार रूप हो गया है। ईर्ष्या-द्वेष तथा घृणा का अंधकार फैलता ही जा रहा है । हमारा बहुत सा सुख दूसरों के प्रति हमारे संशय और अविश्वास से पैदा हुआ है जिसे हम आंखों की कोरों में जरा-सी मुस्कान की किरण फैलाकर अपना बना सकते हैं। जिसे हम अधर पर फूटे दो प्रेम-वचनों से जीत सकते हैं उसे हम अपनी शंकालू दृष्टि, चढ़ी हुई भौंहों और व्यंग्य के कटु शब्दों की मार से दूर हटाते जा रहे हैं।

एक समय मित्र-दृष्टि से सबको देखने, औरों को अपना बना लेने की उद्दाम इच्छाशक्ति के चलते मारवाड़ियों ने पूरी दुनिया में अपनी विशेष पहचान का झंडा गाड़ा था। संयुक्त परिवार में रहकर मारवाड़ी अपने व्यापार-वाणिज्य को उन्नत से उन्नततर करने में सफल हुए थे एवं किसी ने भी उनके मार्ग में रोड़े नहीं अटकाये। मारवाड़ी जहां भी गये उनका स्वागत हुआ। एक भावना प्रचलित थी कि मारवाड़ी जहां बसेंगे वहां लक्ष्मी का आगमन होगा ही। लेकिन आज इस समाज में और के लिए मित्र-दृष्टि की बात तो दूर, अपने सगों के लिए भी मित्र-दृष्टि का अभाव है। भाई-भाई की उन्नति नहीं देख सकता। एक दूसरे को नीचा दिखाने की मानसिकता इतनी प्रबल है कि एकता और विकास की बात बेमानी लगती है। लोग अपनी अधिकांश उर्जा मैत्री, समन्वयन, सहकारिता और सहधर्मिता के आधार पर जीवन का विकास करने की बजाय द्वेष, ईर्ष्या, कपटपूर्ण विचारों से जीवन-मूल्यों के विनाश पर खपा दे रहे हैं, लोगों को जोड़ने की बजाय लोगों को तोड़ रहे हैं। इसके खतरनाक परिणाम भी सामने आ रहे हैं।

आप जरा गहराई से लोगों के जीवन पर गौर करें तो पाएंगे कि अधिकांश लोग मानसिक-अवसाद से ग्रस्त हैं। हो सकता है कि उनके पास सुख के सारे सामान मौजूद हों पर मानसिक शांति और वास्तविक उत्फुल्लता नहीं है। जीवन को वे बोझ की तरह ढो रहे हैं। पिछले वर्षों में आत्महत्याओं की घटनाओं में जो बढ़ोतरी हुई है उसके मूल में एक कारण मानसिक अवसाद भी है।

जब जीवन बोझ बन जाय, जीवन की स्वाभाविक उष्मा लुप्त हो जाए तो जीवन के प्रति मोह भंग हो जाना संभाव्य है। ऐसे में काई जीवन की इहलीला समाप्त करने की ठान ले तो आश्चर्य कैसा।

पहले तो जीवन आज की तुलना में बहुत कष्टपूर्ण था परंतु आत्महत्या की घटनाएं नहीं होती थीं क्योंकि तब लोग जीवन का महत्व समझते थे। हर हाल में जीवन की स्वाभाविक उष्मा को बनाये रखने का प्रयास करते थे। एक दूसरे के प्रति अविश्वास, संशय और भय की भावना नहीं थी।

आज पुनः मित्र-दृष्टि की जरूरत है ताकि इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों से लोहा लेने में मारवाड़ी समाज सक्षम हो सके अन्यथा संकीर्णता के ये बादल कभी जमकर बरसे तो ठहराव का ठिकाना पाना बहुत मुश्किल होगा।

श्री सीताराम शर्मा- जीवन परिचय

जन्म : १३ अगस्त १९४६, **शिक्षा** : बी. कॉम. एम.बी.ए.। वर्तमान में बेलारूस गणराज्य के कोलकाता में कन्सुल जनरल। उप-महासचिव एवं निर्देशक एशिया प्रशान्त क्षेत्र, विश्व संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था, उपाध्यक्ष, थर्ड मिलेनियम कमिटी फार सोशल ट्रानजिसन, सचिव, फ्रेडस आफ विक्टोरिया मेमोरियल, निर्देशक, बोर्ड आफ गर्वनरस, इन्स्टीट्यूट फार इन्सपेरेशन एण्ड सेल्फ डेवलपमेंट, अध्यक्ष, किशलय स्कूल, एडवाईजर, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, रोटरी इण्टरनेशनल आदि।

मारवाड़ी सम्मेलन : सत्तर के दशक के आरम्भ में कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी सदस्य, तत्पश्चात मंत्री। १९९३-९७ राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, ९७-२००१ एवं २००१-२००४ राष्ट्रीय महामंत्री, २००४ से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष। जून २००६ राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित।

१९६२-७५ : १६ वर्ष की आयु में १९६२ में सामाजिक जीवन में प्रवेश। सचिव, बाल परिषद, महासचिव, कलकत्ता स्टडी ग्रुप, महासचिव, इण्डो हंगेरियन फ्रेंडशिप सोसायटी, उप-सम्पादक, विचार प्रवाह हिन्दी पाक्षिक, उप सम्पादक जनसंसार हिन्दी साप्ताहिक, सम्पादक, कालडस्ट अंग्रेजी साप्ताहिक, विशेष संवाददाता आनलूकर मुम्बई से प्रकाशित अंग्रेजी पाक्षिक, सदस्य, साउथ इस्टर्न रेलवे जोनल रेलवे युर्जस कन्सलटेटिव कमिटि, आदि।

१९७५-१९८५ : प्रथम विदेश यात्रा सपत्नीक १९७८, सोवियत रूस, लन्दन, पेरिस एवं जेनेवा। संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था के विश्व सम्मेलन १९८३ एवं १९८५ जेनेवा में भारतीय प्रतिनिधि। केन्द्रीय संचार मंत्री द्वारा कलकत्ता टेलीफोन एडवाईजरी कमिटि के सदस्य नियुक्त। हंगरी सरकार के निमंत्रण पर हंगरी यात्रा-१९८०, १९८४ में भारतीय दल के उपनेता के रूप में सोवियत रूस की यात्रा।

१९८५-९५ : विश्व संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था सम्मेलनों में भारतीय प्रतिनिधि ओटावा (१९८७) मास्को (१९८९) बारसलोना (१९९१) जेनेवा (१९९३) एवं सेनफ्रांसिसको (१९९५); एशिया प्रशान्त निर्देशक के रूप में क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित- नयी दिल्ली (१९८६) उलान-बटार, मंगोलिया (१९८८) टोकियो (१९९०), नयी दिल्ली-ढाका (१९९५), बेजिंग (१९९७) एवं बैंकाक (२००२); १९८६ में विश्व संयुक्त राष्ट्रसंघ संस्था, जेनेवा के निर्देशक निर्वाचित, एवं १९९२ में विश्व संस्था के डिपटी सेक्रेटरी जनरल, निर्वाचित। १९८६ में सार्क गैर-सरकारी संस्थाओं के क्षेत्रीय सम्मेलन में प्रमुख वक्ता के रूप में ढाका, बंगलादेश आमंत्रित। १९८७ में भारतीय राष्ट्रसंघ संथा की चीन मैत्री यात्रा डेलिगेशन के सचिव। १९९३ में राष्ट्रसंघ दिवस, काठमांडू में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित, १९९५ में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा राष्ट्रसंघ स्वर्ण जयंती समारोह समिति का सदस्य नियुक्त। ''युनाइटेड नेशनस् : १०० पापुलर क्वोश्चन एण्ड आन्सर्स'' नामक पुस्तक का सम्पादन जिसका विमोचन १९९५ में तत्कालीन राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा द्वारा राष्ट्रपति भवन, नयी दिल्ली में।

१९९५-२००५ : सोका गगाई इंटरनेशल, जापान द्वारा टोकियो में सम्मानित। २००० में इन्स्टीट्युट आफ ओरियन्टल, फिलासफी, टोकियो द्वारा स्कालरली एचिवमेंट एवार्ड। १९९९ में सियोल अन्तर्राष्ट्रीय एन.जी.ओ. सम्मेलन में चीफ रेपोरटियर नियुक्त। संस्थापक अध्यक्ष, अखिल भारतीय गौड़ ब्राह्मण सभा, अध्यक्ष रोटरी क्लब आफ कोलकाता इस्टलेंड ट्रस्ट, को-चेयरमैन, क्राफेस उप समिति, दी एग्री हार्टीकल्चर सोसायटी आफ इण्डिया, अध्यक्ष राजस्थान ब्राह्मण संघ, विदेशमंत्री के निमंत्रण पर बेलारूस गणराज्य की यात्रा (२००१) परामर्शदाता, इन्स्टीट्युट आफ यू.एन. स्टडीज, नयी दिल्ली, चेयरमैन, बोर्ड आफ ट्रस्टी, किशलय इन्स्टीट्युट, मुख्य वक्ता, अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार, संसद भवन, वेलिंगटन, न्यूजीलैंड (२००१), पाल हैरिस फेलो, मिन आन कन्सर्ट एसोसियेशन, जापान द्वारा मानद् सदस्यता। विभिन्न हिन्दी एवं अंग्रेजी दैनिक पत्रों व पत्रिकाओं में अन्तर्राष्ट्रीय एवं सामाजिक विषयों पर ढेरों लेख।

परिवार : पिता स्वर्गीय द्वारकादास शर्मा १९२० में १५ वर्ष की आयु में कलानौर (हरियाणा) से कलकत्ता आये एवं अग्रज भाई के साथ मिलकर, शेयर, जूट एवं हैसियन आदि का व्यवसाय आरम्भ किया। फर्म-नेकीराम द्वारकादास कलकत्ता में ईस्ट इंडिया जूट एण्ड हैसियन एक्सचेंज लिमिटेड के प्रथम सदस्यों में वर्तमान में मिरोण्डा ट्रेड एण्ड कामर्स प्रा. लि. एवं मर्करी इण्टरनेशनल के नाम से स्टील, मशीनरी एवं कोयले के आयात का कारोबार। पत्नी आशा खेतड़ी (राजस्थान) से। सन्तान : एक पुत्र एवं दो पुत्रियाँ।

सम्मेलन से जुड़े बीते दिनों की यादें

-सीताराम शर्मा, नव-निर्वाचित अध्यक्ष

मुझे आज, अपने अध्यक्ष निर्वाचित होने पर सम्मेलन के दसवें अधिवेशन रांची (३०-१२-७३) में स्वर्गीय भंवरमल सिंघी के अध्यक्षीय भाषण के ये शब्द याद आ रहे हैं :

''सम्मेलन के इतिहास में यह पहला अवसर है जबकि मेरे जैसा एक अकिंचन बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ता, जिसके पास न सम्पदा है, न सत्ता का योग, इस पद पर आसीन हुआ है। इस दृष्टि से निश्चय ही यह एक बड़ा परिवर्तन है और इसी रूप में मैंने आपके आदेश को शिरोधार्य किया है। .....मैं इस उत्तरदायित्व और कर्त्तव्य के निर्वाह में कितना सफल हो सकूँगा, यह तो नहीं जानता पर प्रयास अवश्य करूँगा- कर्मण्ये वाधिकारस्ते में।''

संभवत: यह मेरा पहला अधिवेशन था। इसी समय के आस-पास मेरा सम्मेलन से सक्रिय परिचय हुआ था। इसके पूर्व १९६४-६५ से ही पश्चिम बंग मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा विशुद्धानन्द विद्यालय, कलकत्ता, के सभागार में प्रतिवर्ष आयोजित होली-दीपावली प्रीति सम्मेलनों में जाना होता था।

खैर परवर्ती वर्षों में कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन का मंत्री बनने का अवसर प्राप्त हुआ एवं इस बीच कई राष्ट्रीय अधिवेशनों में भाग लेने का मौका मिला। सन् १९८९ में स्वर्गीय श्री रामकृष्ण सरावगी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। श्री सरावगी के साथ मेरे काफी नजदीकी सामाजिक सम्पर्क थे। उन्होंने मुझसे राष्ट्रीय महामंत्री के पद को स्वीकार करने का बलपूर्वक अनुरोध किया जिसे मैं व्यक्तिगत कारणों से उस समय स्वीकार नहीं कर सका। श्री सरावगी के प्रति मेरे मन में गहरा सम्मान था इसलिये यह बात आज भी कभी-कभी कचोटती है। ८० के दशक में कई वर्षों तक मैं सम्मेलन से कुछ अलग-थलग उदासीन-सा ही रहा। मन में निराशा के भाव थे। लेकिन बैठकों एवं अधिवेशनों में बराबर हिस्सा लेता रहा। इसी मनोदशा में १९९३ में दिल्ली अधिवेशन में भाग लेने गया लेकिन दूसरे दिन बीच में ही चण्डीगढ़ रवाना हो गया।

कलकत्ता वापसी पर श्री गीतेश शर्मा ने कहा कि मैंने दिल्ली अधिवेशन में निर्वाचित अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान को तुम्हारा नाम राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री के लिये बुझाया है। वे सम्पर्क करें तो इन्कार नहीं करना क्योंकि मैंने हाँ कर दी है। ईमानदारी से कहना चाहता हूँ कि मैंने अनमने मन से ही इसे स्वीकार किया।

जालान जी की सम्मेलन के प्रति निष्ठा एवं समर्पण भाव ने मुझे बहुत प्रभावित किया एवं आरम्भ हुआ एक आदर, श्रद्धा एवं विश्वास का सम्बन्ध जो आज भी अटूट है। श्री दीपचन्द नाहटा राष्ट्रीय महामंत्री थे, उनकी अस्वस्थता के कारण मुझे संयुक्त महामंत्री के रूप में कुछ अतिरिक्त भार वहन करना पड़ता था, लेकिन वही मेरे लिये सबसे बड़ी ट्रेनिंग साबित हुई। श्री नाहटा सही मायने में गांधीवादी एवं श्रेष्ठतम सज्जन पुरुष हैं। मैं अपने आप को आज भी उनका श्रेष्ठ स्नेह पात्र समझता हूँ। एक बहुत ही बढ़िया टीम थी, जिसमें एक दूसरे के प्रति आदर था, सम्मान था, स्नेह था। श्री इन्दर चन्द जी संचेती एवं भाई लोकनाथ डोकानिया दोनों मेरे से बहुत वरिष्ठ थे लेकिन उनका सहयोग एवं समर्थन प्रेरित करता था। १९९७

हैदराबाद से पधारे आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश बंग एवं श्री राम भण्डारी हैदराबादी पगड़ी पहनाकर निर्वाचित अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा का स्वागत करते हुए।

में जालान जी के द्वितीय कार्यकाल में मुझे महामंत्री निर्वाचित किया गया। २००१ में सम्मेलन के समक्ष सचमुच नेतृत्व के अभाव का प्रश्न था। मुझे इस बात का गर्व है कि मैंने श्री मोहन लाल तुलस्यान को सम्मेलन से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया एवं उन्होंने सम्मेलन को वर्षों तक सफल नेतृत्व प्रदान किया है। २००१ से २००४ तक मेरा राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में द्वितीय कार्यकाल रहा। २००४ में मुझे मुम्बई अधिवेशन में उपाध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

पिछले १३ वर्षों (१९९३ से २००६) में सम्मेलन से मैंने बहुत कुछ सीखा है, बहुत कुछ पाया है- जो सबसे अधिक पाया वह है लोगों का असीमित अपनापन, स्नेह एवं आशीर्वाद। आज भी यही मेरी सबसे बड़ी शक्ति है। किन किन के नाम गिनाऊं, सब अनमोल एवं बहुमूल्य साथी हैं। कुछ हमारे बीच नहीं रहे, मैं उन्हें कभी नहीं भूला पाऊँगा। आज जब आप सबने मुझे सर्वसम्मति एवं इतने स्नेह एवं सम्मान से राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व एवं भार दिया है मैं उनकी स्मृति को प्रणाम करना चाहता हूँ। ताराचन्द दारुका (दुमका), जयदेव खण्डेलवाल (गौहाटी), राम निवास शर्मा (हैदराबाद), रामकृष्ण सरावगी (कलकत्ता)।

आप सबने मुझे राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया इस अवसर पर मैं देश भर में कार्यरत सम्मेलन से जुड़े सभी भाई-बहनों को प्रणाम करना चाहता हूँ। मेरे सह-राष्ट्रीय पदाधिकारियों, प्रांतीय अध्यक्षों एवं अन्य प्रांतीय पदाधिकारियों एवं सदस्यों, अखिल भारतीय समिति के सदस्यों सभी के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ एवं उनके सहयोग एवं समर्थन की कामना एवं प्रार्थना करता हूँ।

मैंने अपनी बात सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष प्रखर चिन्तक स्वनामधन्य आदरणीय स्वर्गीय भंवरमल सिंघी के अध्यक्षीय भाषण से उद्धृत कर आरम्भ की थी, अपने अध्यक्ष निर्वाचित होने पर उन्हीं की बात को दोहराना चाहता हूँ :

''आप के साथ मैं और मेरे साथ आप सब चलेंगे तो समाज के विकास और प्रगति की दिशा में हमारी भावी यात्रा अवश्य सफल और सार्थक होगी।''

सभापति का निर्वाचन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संविधान की धारा १५ :

(१) प्रादेशिक सम्मेलनों से अधिवेशन की तिथि से २ मास पूर्व नये सत्र के सभापति के नाम के लिये सुझाव मांगे जायेंगे। सुझाव अखिल भारतीय समिति के सम्मुख प्रस्तुत किये जायेंगे।

(२) अखिल भारतीय समिति आये हुए सुझावों के आधार पर सम्मेलन के साधारण अधिवेशन की तिथि से कम से कम एक महीने पहले सम्मेलन के सभापति का चुनाव करेगी।

(३) किसी कारणवश यदि निर्वाचित सभापति पद ग्रहण न कर सके तो अखिल भारतीय समिति को अधिकार होगा कि किसी दूसरे सज्जन को किसी भी समय सभापति निर्वाचित कर ले। सम्मेलन के सभापति ही विशेष अधिवेशन के सभापति होंगे।

(४) सभापति चुनने की पद्धति अखिल भारतीय समिति अथवा कार्यकारिणी समिति द्वारा बनाये हुए नियमों के अनुसार होगी।

अखिल भारतीय समिति की बैठक

नागपुर, १३ जून २००६

श्री सीताराम शर्मा सम्मेलन के सभापति निर्वाचित

नागपुर- गत १३ जून को आयोजित अखिल भारतीय समिति की बैठक में श्री सीतारामे शर्मा को सर्वसम्मति से आगामी सत्र के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। वर्तमान में श्री शर्मा सम्मेलन के उपाध्यक्ष हैं। सम्मेलन के ७१ वर्ष के जीवन में १६वें सभापति हैं। श्री शर्मा अगले दो महीने में आयोजित २०वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पदभार ग्रहण करेंगे। श्री शर्मा १९९३ से १९९७ तक राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री रहे, १९९७ से २००१ एवं २००१ से २००४ तक दो कार्यकाल के लिये राष्ट्रीय महामंत्री एवं २००४ से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं। प्रस्तुत है अखिल भारतीय समिति की बैठक की संक्षिप्त रपट :-

बैठक के आरम्भ में उपस्थित राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारियों व बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्कल, झारखण्ड,

नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय समिति की बैठक में दस प्रांतों से पधारे सदस्यगण।

पूर्वोत्तर, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश आदि राज्यों से पधारे प्रतिनिधियों ने अपना-अपना परिचय दिया एवं आयोजन समिति द्वारा उन सभी का सम्मान किया गया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री राज के. पुरोहित ने स्वागत भाषण दिया।

अपने उद्‌बोधन में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने अपना दो सत्र का अध्यक्षीय कार्यकाल पूरा होने पर भी सम्मेलन से एक कार्यकर्त्ता की भाँति जुड़े रहने का आश्वासन दिया। उन्होंने समाज के युवाओं से राजनीति में आने का आह्वान करते हुए समाज में आपसी एकता के अभाव पर दुःख प्रकट किया। उन्होंने देश में सेवा के सभी क्षेत्रों में मारवाड़ियों के योगदान की चर्चा की।

महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने कार्यवाही आरंभ करते हुए गत बैठक (११.९.२००५, कोलकाता) की कार्यवाही प्रस्तुत की जिसे सर्व सम्मति से पारित किया गया।

महामंत्री श्री सुरेका ने पिछली अखिल भारतीय समिति की बैठक से अब तक की सम्मेलन की गतिविधियों की रपट प्रस्तुत की।

श्री सुरेका ने जानकारी दी कि सम्मेलन की संविधान की धारा १५ के अनुसार नये सत्र के सभापति के निर्वाचन के लिए प्रादेशिक सम्मेलनों से नाम के लिए सुझाव मांगे गए थे। सभी दसों सम्मेलनों- आन्ध्र प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पूर्वोत्तर, तमिलनाडु, उत्कल, उत्तर प्रदेश एवं पश्चिम बंगाल ने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा (कोलकाता) का नाम प्रस्तावित किया है जिसे उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से पारित किया एवं श्री सीताराम शर्मा सर्वसम्मति से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आगामी सत्र के लिए सभापति निर्वाचित किए गए।

अध्यक्ष श्री मोहन लाल तुलस्यान का श्री राज पुरोहित द्वारा सम्मान।

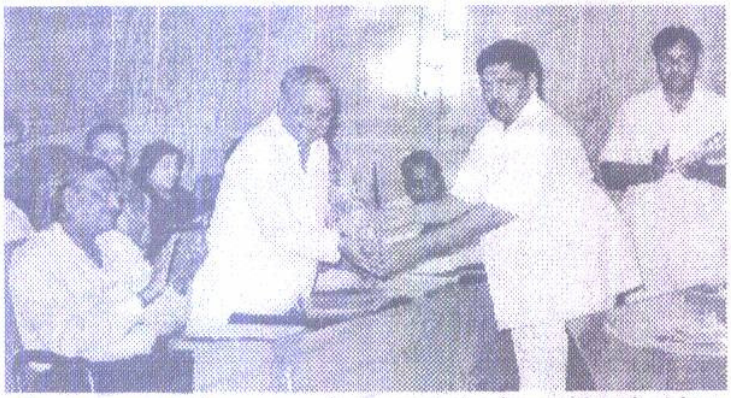

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार का स्वागत करते हुए कार्यक्रम के संयोजक श्री वीरेन्द्र धोका

अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान आगामी सत्र के लिये निर्वाचित अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को बधाई एवं शुभकामनाओं के पुष्पगुच्छ प्रदान करते हुए। साथ में परिलक्षित हैं- उपाध्यक्ष डा. जगदीश प्रसाद मुंधड़ा, महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, प्रान्तीय महामंत्री श्री ललित गांधी एवं राज के. पुरोहित, विधायक।

सर्वसम्मति चुनाव का सदस्यों ने हर्षध्वनि से स्वागत किया।

विभिन्न प्रान्तों से आए सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधिगणों ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री शर्मा को पुष्प गुच्छ, शॉल, प्रतीक चिन्ह, पगड़ी आदि प्रदान कर उन्हें बधाइयाँ दीं।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा ने बिहार एवं झारखण्ड प्रान्त की ओर से श्री शर्मा को बधाई देते हुए विश्वास व्यक्त किया कि उनके नेतृत्व में उनके कार्यकाल में सम्मेलन भवन का निर्माण अवश्य ही होगा एवं सम्मेलन एक नयी ऊँचाई पाएगा। श्री रूंगटा ने तन-मन-धन से सम्पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया ने श्री शर्मा को सुलझे विचारों वाला व्यक्ति बताते हुए उनको अध्यक्ष बनाये जाने पर हर्ष व्यक्त किया। श्री डालमिया ने आगामी राष्ट्रीय अधिवेशन उड़ीसा में आयोजित किए जाने की इच्छा व्यक्त की।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने श्री सीताराम शर्मा की कार्यशैली एवं कार्य दक्षता की प्रशंसा की एवं मारवाड़ी सम्मेलन का विकास सुनिश्चित होना बताया।

पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उड़ीसा के श्री मौजीराम जैन ने इतने सुन्दर वातावरण में अध्यक्ष का चुनाव होने पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि निवर्तमान एवं नवनिर्वाचित अध्यक्षों के आपसी तालमेल से सम्मेलन में अच्छे परिणाम आएंगे।

सुप्रसिद्ध लेखक एवं पत्रकार श्री गीतेश शर्मा ने श्री सीताराम शर्मा को ऊर्जावान, कर्मठ, विद्वान एवं योग्य व्यक्ति बतलाया। उन्होंने शादी व्याह में फिजूलखर्ची पर चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने

उपाध्यक्ष श्री नन्द लाल रूंगटा का स्वागत

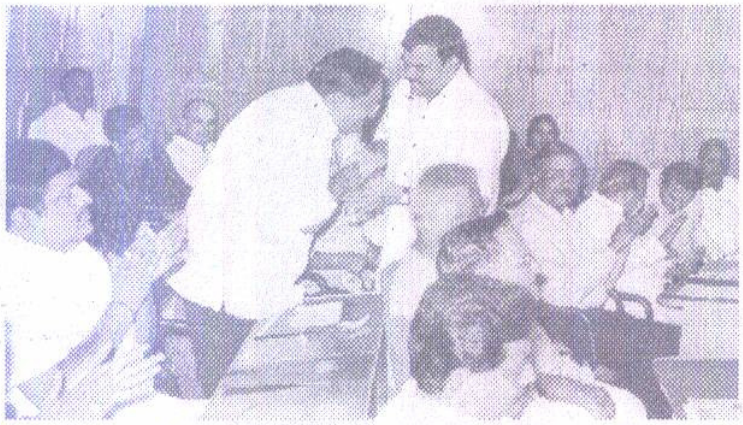

उत्कल प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र डालमिया एवं पास में बैठे मंत्री श्री शिव कुमार अग्रवाल का स्वागत

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया का स्वागत

सेवा के साथ बौद्धिक चिन्तन पर बल दिया।

आन्ध्र प्रदेश के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग ने श्री सीताराम शर्मा के प्रति अपना पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए आगामी राष्ट्रीय अधिवेशन हैदराबाद में आयोजित करने का आमंत्रण दिया। श्री बंग ने श्री शर्मा को हैदराबादी पगड़ी पहनाकर स्वागत किया।

पश्चिम बंग के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया ने अपने प्रान्त की ओर से तन-मन-धन से श्री सीताराम शर्मा के नेतृत्व के प्रति अपने समर्थन का आश्वासन दिया। श्री डोकानिया ने संगठन की शक्ति के महत्व पर जोर दिया।

श्री विश्वम्भर नेवर (कोलकाता) ने श्री सीताराम शर्मा के सर्वसम्मत निर्वाचन पर उन्हें बधाई दी एवं आशा व्यक्त की कि वे आने वाले वक्त की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम सिद्ध होंगे। श्री नेवर ने सम्मेलन की गतिविधियों की दिशा बदलने का सुझाव दिया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा. जय प्रकाश मूंदड़ा ने श्री शर्मा के प्रति यह विश्वास व्यक्त किया कि वे सम्मेलन को एक नयी गति देने में अवश्य सफल होंगे। श्री मूंदड़ा ने लड़के और लड़कियों के जन्म दर के अन्तर पर चिन्ता प्रकट की।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल जाजोदिया ने श्री सीताराम शर्मा के सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित होने पर प्रसन्नता व्यक्त की एवं मंच द्वारा हर सम्भव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री दिलीप गाँधी ने संगठन को, सम्मेलन को, समाज को मजबूती प्रदान करने का सुझाव दिया एवं श्री शर्मा मारवाड़ी समाज को संगठित कर सकेंगे ऐसा विश्वास जताते हुए अपनी शुभकामनाएं दीं।

श्री शर्मा को अन्य बधाई देने वालों में थे राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री सर्वश्री राम

आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश बंग का स्वागत

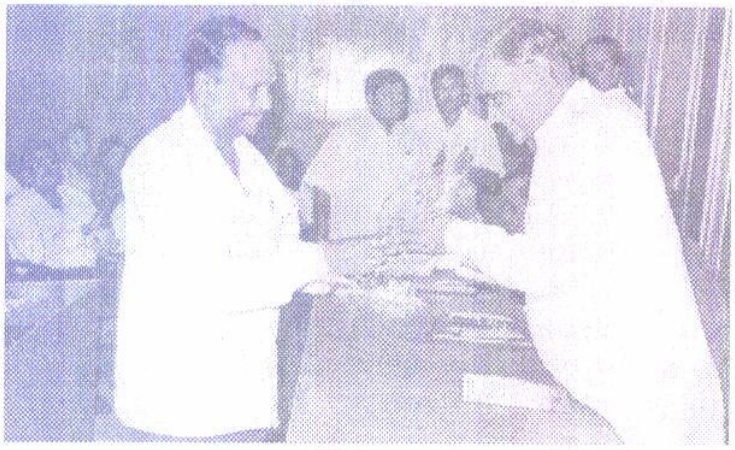

उपाध्यक्ष डा. जयप्रकाश मूंधड़ा का सम्मान

पूर्व केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री श्री दिलीप गांधी एवं महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री ललित गांधी श्री शर्मा को शुभकामनाएं देते हुए।

औतार पोद्दार, उड़ीसा के पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष विश्वनाथ मारोठिया, उत्कल प्रान्तीय मंत्री शिवकुमार अग्रवाल, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जगदीश प्रसाद अग्रवाल, मध्य प्रदेश से प्रांतीय अध्यक्ष मुकुन्ददास माहेश्वरी, प्रान्तीय मंत्री रमेश कुमार गर्ग, प. बंग के प्रान्तीय मंत्री गोपाल अग्रवाल, जोरहाट (पूर्वोत्तर) से बाबूलाल गग्गड़, कोलकाता से अरुण गुप्ता, बंशीलाल बाहेती, नरेन्द्र तुलस्यान, ओमप्रकाश पोद्दार, सूर्य करण सारस्वा, विश्वनाथ कहनानी, रवीन्द्र लड़िया, प्रेम सुरेलिया आदि सहित महाराष्ट्र के प्रान्तीय महामंत्री ललित गाँधी, भरत गुर्जर, वीरेन्द्र प्रकाश धोका आदि।

सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने विभिन्न प्रान्तों से आये हुए सदस्य एवं पदाधिकारीगणों से प्राप्त मान-सम्मान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे इस महान दायित्व को नत मस्तक होकर विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हैं एवं सभी के सहयोग एवं समर्थन की कामना एवं प्रार्थना करते हैं। श्री शर्मा ने युवा मंच और महिला सम्मेलन से सहयोग का अनुरोध किया एवं मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष एवं मंत्री तथा महिला सम्मेलन की अध्यक्षा एवं मंत्री को सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में पदेन सदस्य के रूप में आमंत्रित करने को प्रस्तावित किया। उन्होंने युवा मंच, महिला सम्मेलन एवं सम्मेलन तीनों की कार्यकारिणी की एक संयुक्त बैठक आयोजित कर एक चिन्तन गोष्ठी आयोजित करने का सुझाव दिया।

श्री शर्मा ने सम्मेलन भवन के नव-निर्माण में प्रान्तीय सम्मेलनों के पूर्ण सहयोग की आशा प्रकट की और कहा कि प्रान्तों और जिलों के सक्रिय व मजबूत रहने पर ही सम्मेलन का संगठन मजबूत होगा।

अन्त में मेजबान महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से श्री दामोदर लखानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। बैठक के सफल आयोजन में श्री वीरेन्द्र धोका की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

निर्वाचित अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा का अभिनन्दन करते हुए अखिल भारतीय समिति के सदस्य।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा अभिनन्दन एवं शुभकामनाएं स्वीकार भाषण रखते हुए। साथ में हैं, श्री सुरेका, श्री तुलस्यान, महाराष्ट्र सरकार में मंत्री श्री सतीश चतुर्वेदी एवं युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल जाजोदिया।

नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय समिति की बैठक में दस प्रांतों से पधारे सदस्यगण।

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में १३ जून २००६ को नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय समिति की बैठक में आगत प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत करते हुए प्रांतीय सम्मेलन के पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता।

पूर्वोत्तर प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री बाबूलाल गगड़ का सम्मान

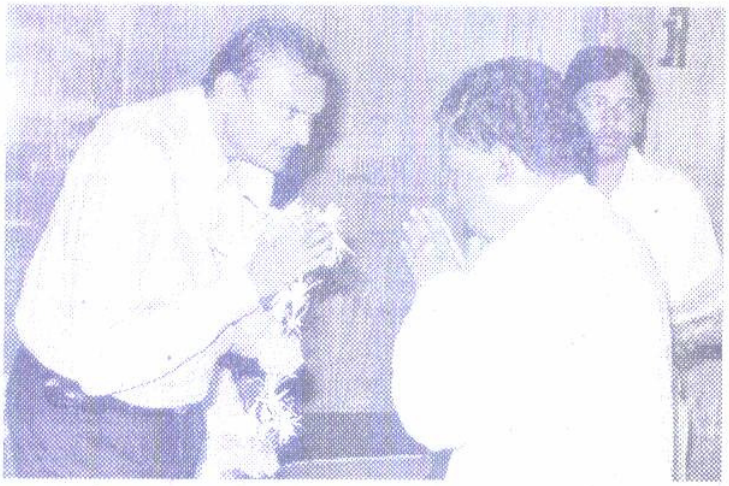

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी का स्वागत

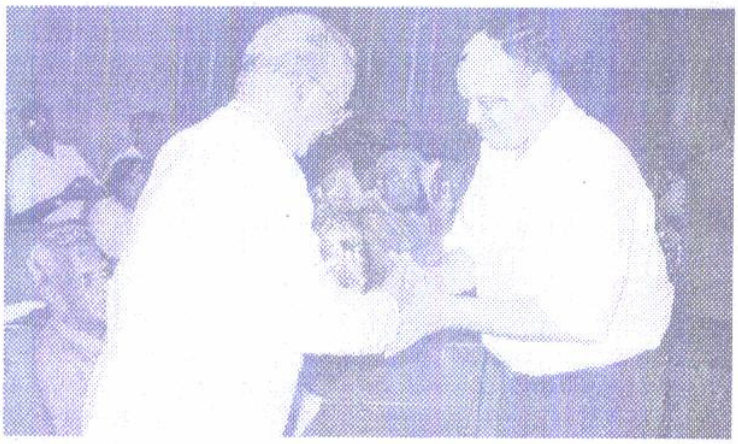

उपाध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल का स्वागत दृश्य।

सम्मेलन के पूर्व सभापति

१.स्व. रायबहादुर रामदेव चोखानी
२.स्व. पदापत सिंघानिया
३.स्व. बद्रीदास गोयनका
४. स्व. रामदेव पोद्दार
५.स्व. रामगोपाल मोहता
६.स्व. बृजलाल बियानी
७.स्व. सेठ गोविन्ददास मालपाणी
८.स्व. गजाधर सोमानी
९.स्व. रामेश्वरलाल टांटिया
१०.स्व. भंवरमल सिंघी
११.स्व. मेजर रामप्रसाद पोद्दार
१२.श्री नन्द किशोर जालान
१३.श्री हरिशंकर सिंहानिया
१४.स्व. रामकृष्ण सरावगी
१५.श्री मोहनलाल तुलस्यान
१६. श्री सीताराम शर्मा (नव-निर्वाचित)

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

प्रांतीय कार्यकारिणी गठित

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के भुवनेश्वर में सफल अधिवेशन के बाद प्रांतीय कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया है। प्रांतीय अध्यक्ष श्री सुरेश कुमार डालमिया एवं प्रांतीय महामंत्री श्री शिवकुमार अग्रवाल ने २५ जून २००६ को प्रांतीय कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची जारी की, जो निम्न प्रकार हैं :-

श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया, अध्यक्ष, श्री देवेन्द्र कुमार लाठ, श्री लक्ष्मण महिपाल, श्री प्रवीण चाँद, श्री राम निवास अग्रवाल, श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, श्री विनोद खण्डेलवाल (सभी उपाध्यक्ष), श्री शिवकुमार अग्रवाल, प्रांतीय महामंत्री, श्री अरुण कुमार मुरारका, श्री दिनेश कुमार गुप्ता, श्री पवन कुमार अग्रवाल, श्री रमेश मेहता, श्री सुभाष गुप्ता, (सभी सचिव), श्री राम अवतार खेमका, प्रांतीय कोषाध्यक्ष, श्री अरुण कुमार केडिया, उप मंत्री, श्री चिरंजीलाल गोयल, उप-कोषाध्यक्ष।

सामूहिक विवाह पद्धति- विसंगतियों को समझना आवश्यक है!

-श्री हनुमान सरावगी, रांची

समाज द्वारा देश भर में प्रारंभ की गई ''परिचय सम्मेलन और सामूहिक विवाह पद्धति'' वस्तुत: समाज में विवाह प्रणाली से जुड़ी विभिन्न विसंगतियों को दूर करने के लिए विकसित की गई एक श्रेष्ठ एवं नई प्रणाली है। वास्तव में समाज को ऐसी किसी नई प्रणाली की आवश्यकता थी और यही कारण है कि इस प्रणाली के आते ही समाज में मानो ताजा हवा के सुखद झोंके का एक एहसास जगा और देखते ही देखते यह प्रणाली लोकप्रिय होने लगी है।

परिचय सम्मेलनों के जरिए जहां अभिभावकों को वर-वधू के चयन में भटकने से मुक्ति मिलती है, वहीं उनके सामने चयन के विकल्प बड़ी संख्या में होते हैं जिसके कारण योग्य जीवन साथी का चयन अपेक्षाकृत ज्यादा अच्छी तरह से हो जाता है। खासतौर पर लड़कियों को तो अब उस भयानक मानसिक यंत्रणा से मुक्ति मिलती है, जो लड़की देखने आने वाले की दंभपूर्ण उल-जलूल हरकतों के कारण कुंठित एवं अपमानित हुआ करती है।

इसी तरह सामूहिक विवाह ने जहाँ समाज में बढ़ते व्यक्तिवादी चिंतन के स्थान पर सामूहिक चिंतन विकसित करने की एक नई स्थिति तैयार की है, वहीं विवाह आयोजनों में आडम्बर, फिजूलखर्ची, अप्रासंगिक रीति-रिवाजों के निर्वाह, शराब तथा फूहड़पन के बढ़ते प्रचलन से छुटकारे का भी रास्ता निकाला है। इस नई प्रणाली में विवाह किसी एक का व्यक्तिगत कर्तव्य नहीं बल्कि पूरे समाज के सामूहिक दायित्व के रूप में सामने आता है और इससे सामाजिक चिंतन व संस्थाएं भी मजबूत होती है। लिहाजा परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह ने समाज को एक नई क्रांतिकारी दिशा प्रदान की है।

आज यह पद्धति देश भर में लोकप्रिय हो रही है और अन्य कई समुदायों के लोग भी इस पद्धति का अनुकरण करने की ओर अग्रसर दिखते हैं। हमारे समाज ने जिस नई सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया है, वह अपना दूरगामी एवं स्थायी प्रभाव छोड़ेगी इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि इस प्रारंभिक दौर में हम सभी पहलुओं पर गंभीरता से विचार करते हुए फूंक-फूंक कर सावधानीपूर्वक कदम रखते हुए आगे बढ़ें, न कि किसी भावातिरेक में। इस नई पद्धति की आवश्यकता क्या है, महत्ता क्या है और इसके लाभ क्या हैं इस पर बहुत तरह की बातें सामने आ चुकी हैं। लिहाजा इन प्रश्नों पर विचार करना इस वक्त मेरा आशय नहीं है। प्राय: मैंने देखा है कि सामूहिक विवाह एवं परिचय सम्मेलन की महत्ता पर चर्चा करते करते लोग इस कदर भावातिरेक हो जाते हैं कि उन्हें बहुतेरे नकारात्मक एवं कमजोर पक्ष नजर तक नहीं आते जबकि इन पक्षों को हमने नजरअंदाज किया तो यह भी संभव है कि इस नई पद्धति को अकाल मृत्यु का शिकार तक हो जाना पड़े।

इसलिए यहाँ हम मुख्यत: वैसी कुछ नकारात्मक प्रवृत्तियों एवं पहलुओं की चर्चा करेंगे जो इस नई पद्धति के उत्तरोत्तर विकास में बाधक हो सकती है। इनमें कुछ बातें व्यवहार से जुड़ी हैं तो कुछ चीजें अवधारणा से। सबसे पहले अवधारणात्मक पहलुओं को ही लें। आयोजकों द्वारा बारंबार यह घोषणा की जाती है कि यह पद्धति गरीबों, कमजोरों को 'उद्धार' के लिए ही नहीं बल्कि संपूर्ण समाज में एक नए परिवर्तन के लिए लागू की गई है। लेकिन इसके बावजूद आयोजक स्वयं कहीं न कहीं इस अवधारणा के शिकार होते हैं कि इन कार्यक्रमों में प्राय: बेबस तथा किसी न किसी वजह से अनुपयुक्त या असामान्य युवक-युवती ही शामिल होते हैं। खासकर जो लोग सामूहिक विवाह में सम्मिलित होते हैं उनके संबंध में तो आयोजकों के मन में बैठी ऐसी अवधारणाएं इन रूपों में सामने आती हैं-

१. वे स्वयं अपने बेटे-बेटियों को इसमें शामिल नहीं करना चाहते।

२. मंच से घोषणा करते हैं कि संपन्न लोग भी इसमें शामिल हों जबकि इस घोषणा से यह प्रतिध्वनि उभरती है कि सिर्फ निर्धन ही इसमें शामिल हैं।

३. सामूहिक विवाह में सम्मिलित जोड़ों को उपहार स्वरूप देने के लिए तरह-तरह की चीजें जुटायी जाती हैं और उनका फूहड़ प्रदर्शन किया जाता है। समाज के दाता बंधु भी बढ़-चढ़ कर छोटी बड़ी चीजें उपहार स्वरूप पहुंचाने लगते हैं जबकि यह सारा ओछापन कुल मिलाकर विवाह में शामिल परिवारों के लिए अपमानजनक होता है। इस उपहार की प्रवृत्ति में यह बात निहित होता है कि 'दहेज देना तो आवश्यक है, लेकिन चूंकि लड़की वाले असहाय हैं इसलिए समाज की ओर से दहेज दिया जा रहा है।''

४. प्राय: आयोजक बंधु ऐसा कहते पाए जाते हैं कि हमने इतने युवक-युवतियों का उद्धार कर दिया। ऐसी बातें उनकी इसी अवधारणा का परिणाम है कि यह पद्धति गरीब एवं लाचार लोगों के लिए है।

दूसरी तरफ जो चीजें व्यवहार में नजर आती हैं, उन पर भी ध्यान देना चाहिए-

१. आयोजक प्राय: इन कार्यक्रमों को आत्म प्रचार एवं आत्मनिष्ठा का विषय मान बैठते हैं जो उनके पूरे आचार-व्यवहार और कथन में स्पष्ट नज़र आती है।

२. इन आयोजकों में अनावश्यक भीड़ जुटायी जाती है और एक किस्म का मजमा या तमाशा बना दिया जाता है जबकि याद रखना चाहिए कि तमाशा देखना तो हर कोई चाहता है लेकिन तमाशा बनना कोई नहीं।

३. आयोजनों में सादगी एवं शालीनता के स्थान पर प्रायः फूहड़ तामझाम के पहलू नजर आते हैं जो कि ऐसे आयोजनों की मूल आत्मा को ही नष्ट करने जैसी बात है।

४. आयोजकगण प्रायः आत्म प्रशंसा में लीन नजर आते हैं और माइक बांधकर आपस में एक दूसरे को सम्मानित करते और होते हुए विवाह के रंग में भंग डालते हैं।

ऐसी चीजें विवाह की पूरी प्रक्रिया में वर-वधू पक्ष और अभिभावकों को गौण बना देती है और प्रायः आयोजक ही पूरे कार्यक्रम पर,हावी नजर आते हैं जबकि ऐसे कार्यक्रमों में वर-वधू और उनके अभिभावकों-रिश्तेदारों को सामने लाकर स्वयं आयोजकों को मात्र व्यवस्थापकीय भूमिका का निर्वाह करना चाहिए ताकि वर-वधू पक्ष के लोग उपेक्षित महसूस न करें और विवाह का आनंद उठा सकें।

उपर्युक्त बिंदुओं द्वारा मैंने परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह के संबंध में धारणाओं एवं व्यवहार में मौजूद विसंगतियों की ओर ईशारा किया है। यदि तत्काल इन बिंदुओं की ओर गंभीरता से विचार नहीं किया गया तो जिस नई पद्धति के विकास की अपार संभावनाएं मौजूद है उनके मिटने में देर नहीं लगेगी और अंततः यह पद्धति महज ''उद्धार'' तक सीमित होकर रह जाएगी।

टी.वी. या टी.बी.

-आशारानी लखोटिया

ये टी.वी. है या टी.बी. है? जी हां, कोई जमाने में तो ला ईलाज रोग था टी.बी.। इसी प्रकार आज का लाईलाज रोग है टी.वी.। आज के युग में रहने के लिए कमरा छोटा है, उसमें बाथरूम न हो, सोने की जगह थोड़ी ही हो मगर टी.वी. माता तो अपना स्थान ऊंची दिवार पर भगवान की मूर्ति के जैसे ही बना लेती है। बड़े व बच्चे उठते ही टी.वी. महारानी को खोलकर तरह-तरह के कार्यक्रम देखते हैं तथा उनकी नकल भी करते हैं जैसा कार्यक्रम हो उसकी वैसी नकलें करने में वे माहिर हो जाते हैं। गरीबों के ही नहीं, अमीरों के भी वही हाल हैं। बिस्तर में ही चाय की चुस्कियां टी.वी. के कार्यक्रम के साथ लेते हैं और उनके साहब जादे या साहब जादियां तौबा-तौबा क्या कहें? क्योंकि हर कार्यक्रम के बाद तो फूहड़ सा विज्ञापन आता है, जिसे परिवार के साथ बैठकर देखने में शर्म आती है। हां, समाचार या अच्छी कोई फिल्म आए तो देखने में अच्छा लगता है मगर अच्छी फिल्में तो कभी कदास ही देखने को मिलती हैं जिसे बच्चे बेकार समझ कर देखना नहीं चाहते हैं। उन्हें चाहिए जैसे छोटे बच्चों को कार्टून, बड़ों को डिस्को डांस, मां को चाहिए सीरियल, पिता को चाहिए न्यूज। बताइए कौन सा कार्यक्रम देखा जाय। सीरियल इतने उल्टे-सीधे आते हैं, जिसने हमारी संस्कृति का सत्यानाश कर दिया है। कहां गए वे दिन जहां संयुक्त परिवार का माहौल होता था। एक के दुख में सभी दुखी एक के सुख में सभी सुखी।

टी.वी. और बच्चे

जहां कभी बच्चे सारा दिन गलियारों में खेलते थे। कहीं गुल्ली डंडा, कहीं लुका-छिपी। कहने का तात्पर्य है कई तरह के खेल जिससे स्वास्थ्य भी अच्छा रहता था, खेलते थे और एक दूसरे के दुख-सुख को समझते थे। मगर आज स्वास्थ्य के लिए कौन परवाह करता है? खाने में तो कोक एवं पीज्जा। इसके अलावा और कुछ चाहिए ही नहीं। स्कूल से घर आए। जैसे-तैसे होम वर्क किया और बैठे टी.वी. के सामने। यह भी कोई जीवन है?

टी.वी. और महिलाएँ

महिलाओं को लीजिए। बस दिन में और आधी रात में देखना सिर्फ सीरियल जो आज कई तरह के हैं। वैसे तो वह घर-बाहर इतना व्यस्त रहती हैं कि उन्हें होश ही नहीं रहता कि कब सुबह हुआ और कब शाम हुई। टी.वी. के सीरियल में जितने खराब वातावरण में देखते हैं तो उनके दिमाग में वही बात घर कर जाती है, जो हमारी भारतीय संस्कृति का सत्यानाश करती है। चाहे ''क्योंकि सास भी कभी बहू थी'' या ''कहानी घर-घर की'' या न जाने कितने ही सीरियल जो देखती रहती हैं जिससे परिवार का बिखरना, भाई-भाई में बैर, सरे आम शराब पीना, जरा सी बात पर पति-पत्नी में बिच्छेद होना। इन सबसे मन अशान्त होता है और इस वजह से डाइबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, डिप्रेशन इत्यादि कई प्रकार की बीमारियां जन्म लेती हैं।

अतः टी.वी. के कार्यक्रम अच्छे कम, पर बुरे ज्यादा हैं। अच्छे कार्यक्रम की गिनती उंगलियों पर कर सकते हैं। जैसे घर बैठे सारी दुनियां की खबर, नए विज्ञान की खोज, खेती व व्यापार के नए-नए तरीके प्रकृति के अनोखे रूप इत्यादि हैं, मगर बहुत कम।

अब देखिए बुजुर्गों के लिए संस्कार तथा आस्था बड़ी अच्छी हैं मगर उनमें विज्ञापनों की भरमार रहती हैं। अब जरा सोचें कि बिना टी.वी. जीवन ज्यादा अच्छा था या आज। बहनें भूल गई बुनाई कढ़ाई जबकि मैंने अभी एक पेपर में पढ़ा था कि अमेरिका व अन्य देशों में महिलाएं खूब बुनाई करती हैं मगर आज हमारे देश में तो टी.वी. देवी का खूब ही खूब आदर है। न घर देखना है, न संयुक्त परिवार देखना, न किसी से मेल जोल सिवाय किट्टी पार्टी के मुलाकात। अतः टी.वी. में काम की बातें देखें तो टी.वी. है वरना यह टी.बी. है।

सुख माने तो सुख है

ईश्वर का धन्यवाद करो कि हमें सुख से जीवन यापन करने की सुविधाएं उपलब्ध है। गरीब दुखी है धन के अभाव में व धनवान दुखी है ईर्ष्या, तृष्णा, यश आदि से। अतः संतोषी सदा सुखी है।

नई और पुरानी पीढ़ी के बीच सेतु बनने की जरूरत

-गौरी शंकर कायां, कोलकाता

पिछले दिनों दो समाचारों ने बरबस मेरा ध्यान आकर्षित किया। पहला समाचार था- 'प्रियंका दम्मानी का गौरव।' हिंदी दैनिक सन्मार्ग में प्रकाशित इस समाचार में कहा गया था कि महानगर के सेवाभावी सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री गोपाल दम्मानी की सुपुत्री एसेम्बली ऑफ गॉड चर्च स्कूल की छात्रा प्रियंका दम्मानी ने आईएससी बोर्ड के बारहवीं कक्षा की परीक्षा में ९५.५ प्रतिशत अंक प्राप्त कर विशिष्ट स्थान बनाया। वह अपने विद्यालय के कॉमर्स सेक्शन में प्रथम रही। उसने इसी वर्ष अपने विद्यालय में 'बेस्ट स्टूडेन्ट ऑफ एक्सीलेंट' का सर्वोच्च अवार्ड भी प्राप्त किया। प्रतिवर्ष शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद, वाद-विवाद एवं अन्य प्रतियोगिताओं में भाग लेकर वह बहुत से पदक प्राप्त करती रही है।

इससे पहले कोलकाता से ही प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स में 'Tale of a Young talent' शीर्षक से एक आलेख प्रकाशित हुआ था। जिसमें महानगर के सुपरिचित कवि श्री श्याम सुन्दर बगड़िया की पौत्री मेघा बगड़िया की विलक्षण लेखन प्रतिभा का विस्तृत विवरण था। ला मार्टिनर गर्ल्स स्कूल की ग्यारहवीं की छात्र मेघा की कहानी www.electronicencounters.com को १५ शहर के ४००० स्कूलों के १,२०,००० छात्रों की लेखनी प्रतियोगिता Class note Young author Contest 2005 के फाइनल में स्थान मिला था।

इन दो समाचारों से मारवाड़ी समाज में शिक्षा के गुणात्मक विकास, विशेषकर लड़कियों में, का संक्षिप्त परिचय मिलता है। ऐसी और भी बहुत सी छात्राएं हैं और छात्र भी जो शिक्षा के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा से नये कीर्तिमान स्थापित कर समाज और परिवार का मान बढ़ा रहे हैं।

यह मारवाड़ी समाज के शिक्षा क्षेत्र में अग्रगति का एक सकारात्मक पहलू है जिस पर हमें गर्व होना चाहिए। इसी कोलकाता में आज से महज तीस-चालीस वर्ष पहले तक मारवाड़ी समाज शिक्षण संस्थानों के निर्माण में तो अग्रणी थे। पर स्वयं के शिक्षा को लेकर संकीर्ण। तब व्यापार-वाणिज्य के उपयुक्त कामचलाऊ शिक्षा प्राप्त कर लेना ही अधिक प्रचलित था।

वक्त के साथ देश-विदेश के लोगों में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्र में जो बदलाव आए हैं मारवाड़ी समाज ने उनके अनुरूप अपने को ढाला और वही वजह है कि न सिर्फ व्यापार-वाणिज्य बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी इस समाज के लोगों की भागीदारी बढ़ी है।

आज के समाज की बीते कल से तुलना करें तो हम पाते हैं कि बदलाव की आंधी में हमारे समाज में अगर कुछ सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं तो बहुत से नकारात्मक प्रभाव भी समाज में परिलक्षित हो रहे हैं।

व्यावसायिक दृष्टि से समाज में नई चेतना का विकास हुआ है। परंपरागत व्यवसाय के साथ-साथ नये क्षेत्रों में लोग प्रवेश कर रहे हैं और सफल भी हो रहे हैं। सूचना-तकनीक और आधुनिक प्रायोगिकी के क्षेत्र में मारवाड़ियों के पदार्पण से आने वाले दिनों में एक नई तस्वीर उभरने की आशा है। हालांकि यहां यह इंगित करना भी जरूरी है कि व्यवसाय में आनेवाली अड़चनों, बाधाओं से घबराकर बहुत से युवा नौकरी को तरजीह देने लगे हैं जो एक व्यावसायिक प्रकृति के समाज के लिए चिन्ता का विषय है।

एक समय था जब मारवाड़ी समाज व्यापार-वाणिज्य के समानांतर साहित्य-संस्कृति के विकास में भी प्रमुख भूमिका निभाता था। उत्कृष्ट पुस्तकों का प्रकाशन, साहित्य-चर्चा, संस्कृति को लेकर बहस आदि करने में मारवाड़ी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी होते थे, संस्थाओं के आयोजन में जाने को लोग उतावले रहते थे। संसद में तो भारत के राष्ट्रीय स्तर के रचनाकारों का निरन्तर आना-जाना था। मेरी साहित्यिक अभिरूचि के उत्स में भी संसद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कालांतर में भारतीय भाषा परिषद में भी कुछ समय तक स्तरीय कार्यक्रम होते रहे। पर अचानक जैसे इन सब पर विराम लग गया है। हर साल दर्जनों बड़े और सैकड़ों छोटे-मोटे संत कोलकाता आते हैं और हजारों की संख्या में लोग इनके प्रवचनों में शरीक होते हैं। लेकिन साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों में लोग श्रोताओं-दर्शकों को तरस जाते हैं। आज कोलकाता में रहकर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित समाजसेविका डा. श्रीमती शारदा फतेहपुरिया, उपन्यासकार डा. प्रभा खेतान, मधु कांकरिया उपन्यासकार अलका सरावगी आदि को मारवाड़ी समाज ने कितना सम्मान दिया है। सामाजिक क्षेत्र में सक्षम नेतृत्व का घोर अभाव है। सामाजिक संस्थाओं में नई पीढ़ी की रूचि एकदम नहीं के बराबर है। जो नेतृत्व है वह पुरानी पीढ़ी का है जिसके पास आधुनिक दृष्टिकोण का अभाव है। अधिकांश लोग सामाजिक संस्थाओं में पदों से चिपके बैठे हैं और इसे आत्मप्रचार का माध्यम बना रखा है।

ऐसे में ऐसी कड़ी का होना बहुत जरूरी है जो समाज के नये और पुराने की दूरी को कम कर सके। अन्यथा विसंगति की यह स्थिति सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर देगी और सिवाय पश्चाताप के कुछ भी हाथ आने वाला नहीं। आज जरूरत ऐसे लोगों की है जो प्राचीन गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए नई अवधारणाओं को आत्मसात् करें एवं समाज के समक्ष आनेवाली हर चुनौती का सामना करने को तत्पर होकर भविष्य के सुदृढ़, सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित समाज की नींव मजबूत करें।

भारतीय संस्कृति की विशेषता है कि वहाँ रचे लोक-महाकाव्य जीवन के आदर्शों व उसके अनुरूप रचे दर्शन पर आधारित है।

भामाशाह

प्रताप जयन्ती के उपलक्ष में

-जुगल किशोर जैथलिया, कोलकाता

नरपुंगव भामाशाह का नाम मातृभूमि के उन गिने चुने उज्जवल रत्नों में से है, जिन्होंने आजीवन अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता की रक्षा के लिए सतत संघर्ष किया एवं अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। देश के लिए अपनी सम्पदा की आहुति देने का प्रसंग जहां भी आएगा, भामाशाह का नाम स्वाभाविक रूप से ही सर्वप्रथम स्मरण आएगा। वस्तुत: मेवाड़ एवं महाराणा प्रताप की उज्जवल कीर्ति पताका के सुदृढ़ भामाशाह ही थे, यह कहना किंचित भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। वे केवल दानवीर ही नहीं थे, एक योग्य सेनापति एवं कुशल प्रशासक भी थे। इसी कारण इतिहास में वे 'मेवाड़ के उद्धारक' के नाम से भी विख्यात हैं। भारत सरकार ने गत वर्ष उनकी ४००वीं पुण्य तिथि पर विशेष डाक टिकट जारी की, जिसमें उन्हें 'राजा भामाशाह' का संबोधन देकर राष्ट्र की श्रद्धा व्यक्त की गई है। भामाशाह के पिता भारमल्ल एवं उनके बाद के वंशजों का भी मेवाड़ के इतिहास में स्मरणीय योगदान रहा है। भामाशाह के पुत्र जीवाशाह एवं पौत्र अक्षयराज भी उन्हीं की भांति मेवाड़ के प्रधान बने एवं अपनी सेवाएं अर्पित की।

भामाशाह का जन्म १८ जून १५४७ ई. तदनुसार आषाढ़, शुक्ल १०, १६०४ वि. को हुआ। इनके पिता भारमल्ल को १५२३ ई. में प्रशासनिक एवं सैनिक योग्यता देखकर महाराणा सांगा ने प्रसिद्ध रणथम्भौर किले की किलेदारी सौंपी थी। किन्तु इस किले पर १५४२ ई. में शेरशाह सूरी का आक्रमण एवं अधिकार हो जाने पर ये महाराणा उदय सिंह के पास चित्तौड़ में ही आ गए। महाराणा उदयसिंह का बाल्यकाल रणथम्भौर में भारमल्ल की देख-रेख में ही बीता था। अत: वैर भारमल्ल की कर्तव्यनिष्ठा, कूटनीतिज्ञता, प्रशासनिक कुशलता आदि गुणों से परिचित थे। इस कारण चित्तौड़ आने पर भारमल्ल को एक लाख का पट्टा देकर सामन्त बना कर सम्मानित किया। मेवाड़ के सामन्तों में यह बहुत बड़ी जागीर थी। पिता की मृत्यु के उपरान्त यह जागीर भामाशाह को मिली। भारमल्ल के दो पुत्र हुए, भामाशाह और ताराचन्द। ये दोनों भाई राम-लक्ष्मण की जोड़ी की तरह थे एवं दोनों ही शूरवीर तथा कुशल प्रशासनिक सिद्ध हुए। भामाशाह का बचपन चित्तौड़गढ़ में ही बीता एवं अस्त्र-शस्त्र एवं घुड़सवारी की शिक्षा-दीक्षा भी यहीं हुई। प्रशासनिक कुशलता, सैनिक योग्यता एवं दानशीलता के गुण इन्हें अपने पिता से विरासत में मिले, जो आगे जाकर और भी पल्लवित हुए। महाराणा उदयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र प्रताप से भी भामाशाह की मित्रता चित्तौड़ में ही हुई जो आगे चलकर प्रगाढ़ बनी।

> **अंग्रेजी शासनकाल में भी मेवाड़ ने अपनी अस्मिता बरकरार रखी। सन् १९११ में किंग जोर्ज के सान्निध्य में दिल्ली में दरबार आयोजित किया गया, जिसमें सभी राजे-रजवाड़े आमंत्रित थे, केवल मेवाड़ के राणा के लिये निर्धारित कुर्सी खाली पड़ी थी।**

प्रताप भामाशाह से ७ वर्ष बड़े थे। महाराणा उदयसिंह का अपनी छोटी रानी भटियानी पर अधिक प्रेम था। अत: छोटा होने पर भी इस रानी के पुत्र जगमाल को युवराज घोषित किया गया। १५७२ ई. में महाराणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद उनकी इच्छानुसार जगमाल मेवाड़ की गद्दी पर बैठा, पर मेवाड़ में जैसी संघर्ष परिस्थितियां थीं, उसमें सभी सरदारों की आशाएं वीरता की प्रतिमूर्ति प्रताप पर केन्द्रित थी, वे बड़े भी थे, अत: राज्य के वास्तविक हकदार भी थे। इस स्थिति में सभी प्रमुख सामन्तों-सरदारों ने श्मशान भूमि पर ही प्रताप को राजगद्दी पर बैठाने का निश्चय कर, जगमाल को बलपूर्वक राजगद्दी से उतारकर प्रताप का राजतिलक कर दिया। इसमें भामाशाह का, जो एक बड़ी जागीर का सामन्त था, प्रमुख योगदान था।

प्रताप के राजतिलक के समय मेवाड़ को छोड़कर भारत के अधिकांश भाग पर विदेशी आक्रांता मुगल बादशाह अकबर का अधिकार हो चला था। उसके भारत का एक छत्र सम्राट होने में केवल मेवाड़ ही बड़ी बाधा बना हुआ था, जिस पर वह पहले भी क्रूरतम आक्रमण कर चुका था, पर सफलता नहीं मिली थी। अत: प्रताप के राजगद्दी पर बैठते ही उसने दबाव बनाना प्रारंभ किया एवं वर्षों तक लगातार अपने प्रमुख सामन्तों और मंत्रियों को प्रताप को समझाने भेजा कि वह भी अन्य राजपूत सरदारों की तरह आधीनता स्वीकार कर चैन से जिए। इस क्रम में जलाल खां कोरची, कुंवर मानसिंह, राजा भगवन्तदास एवं राजा टोडरमल जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, परन्तु प्रताप को वे समझा नहीं पाए। इधर अकबर बेताब हो रहा था। अत: युद्ध अनिवार्य हो गया जो इतिहास में 'हल्दीघाटी' के युद्ध के नाम से विख्यात है।

यह युद्ध १८ जून १५७६ ई. को खमनोर गांव के समीप के मैदान में हुआ, जिसे अब 'रक्ततालं' कहते हैं। यह छोटा-सा भयंकर युद्ध जिसमें दोनों पक्षों ने जान सस्ती और इज्जत महंगी कर दी थी। प्रात: काल आरंभ होकर दोपहर तक चला। राणा प्रताप द्वारा की गई व्यूह रचना में राजा रामसिंह तंवर तथा भामाशाह एवं उनका भाई ताराचन्द अपनी सैनिक टुकड़ियों सहित दाहिनी तरफ का मोर्चा सम्हाले हुए थे। इन लोगों ने राजा मानसिंह के नेतृत्व में युद्ध कर रही मुगल सेना के बाएं पक्ष पर इतना तेज हमला किया कि बाई तरफ की मुगल सेना भेड़ों के झुण्ड की तरह भाग खड़ी हुई। भामाशाह एवं ताराचन्द दोनों ही भाइयों का शौर्य देखने लायक था। इसके बाद ये दोनों ही राणा प्रताप के इर्द-गिर्द केन्द्र में आ गए एवं अंत तक वहीं रहे। प्रताप को युद्ध क्षेत्र से सकुशल निकालने एवं सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने में इन दोनों की बड़ी भूमिका रही।

तंवर रामसिंह एवं उसके तीनों पुत्र तथा झाला मान्ना, झाला बीदा आदि अनेक प्रमुख सरदार इसमें वीरगति को प्राप्त हुए।

हल्दीघाटी के युद्ध को मुगल पक्ष ने अपनी विजय बनाकर प्रचारित किया, परन्तु युद्ध के दूरगामी प्रभाव, लक्ष्यप्राप्ति एवं ख्याति को देखते हुए वास्तविक विजय प्रताप की ही मानी जानी चाहिए। गुरिल्ला युद्ध में न तो युद्ध से हट जाने का कोई महत्व है, न उस स्थान पर हुई हार-जीत का। महत्व तो अंतिम मोर्चे की विजय का है। मुगल सेना जिस काम के लिए आई थी, वह कुछ भी पूरा नहीं कर पाई। न तो प्र ाप को पकड़ पाई और न वहां स्थाई आधिपत्य ही जमा पाई। उल्टे वह दहशत में रही कि न जाने प्रताप और उसके सैनिक कब पहाड़ियों से उन पर टूट पड़े। मानसिंह को भी अकबर के पास जाकर युद्ध के बाद अपमानित हो होना पड़ा। इधर हल्दीघाटी युद्ध के बाद प्रताप की कीर्ति पताका चारों ओर फहराने लगी। यह तो सचमुच जनयुद्ध बन गया था, जिसमें राजपूतों के सभी वर्ग, कायस्थ, ब्राह्मण, भील, चारण तो शामिल थे ही, अफगान पठान भी शामिल थे जो हकीम खां के नेतृत्व में प्रताप की ओर से लड़े थे।

इस युद्ध के बाद प्रताप समूचे राष्ट्र की स्वाधीनता की लड़ाई के प्रतीक बनकर उभरे थे। हल्दीघाटी के युद्ध में दिखाई गई सैनिक कुशलता से प्रभावित होकर महाराणा प्रताप ने भामाशाह को 'प्रधान' या प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त कर दिया। वैसे तो भामाशाह प्रताप के राज्यारोहण के काल से ही उनका पूरा आर्थिक प्रबंध सम्भालते थे, पर इस युद्ध के बाद बहुत से प्रमुख सरदारों के मारे जाने से मेवाड़ की अस्थिर होती प्रशासनिक व्यवस्था को पुनः दुरुस्त करने हेतु भामाशाह को जो नया उत्तरदायित्व मिला उसका उन्होंने पूरी कुशलता से निर्वाह किया।'

अकबर ने हल्दीघाटी युद्ध के उपरान्त भी मेवाड़ विजय यानि प्रताप के स्वप्न को पूरा करने हेतु सैनिक अभियान जारी रखे। प्रताप इस समय कुंभलगढ़ में रहते थे। अक्टूबर १५७७ ई. में शाहबाज खां ने भारी सेना के साथ कुंभलगढ़ की नाकेबन्दी कर इस पर अधिकार कर लिया पर प्रताप, भामाशाह, सभी सरदार एवं प्रजा जन वहां से पहले ही अन्यत्र प्रस्थान कर चुके थे। यह भामाशाह की चतुराई थी। मेवाड़ पर इस समय आर्थिक संकट गहराया हुआ था। अतः भामाशाह एवं उनके भाई ताराचन्द ने १५७८ ई. में अकबर के अधीनस्थ मालवा के क्षेत्र पर आक्रमण कर वहां से दण्ड स्वरूप २५ लाख रुपये एवं बीस हजार अशर्फियां प्राप्त की एवं ईडर में निवास कर रहे महाराणा प्रताप को भेंट की। इस धन से प्रताप ने पुनः सेना संगठित की और मेवाड़ से मुगलों को खदेड़ने का अभियान फिर से प्रारंभ किया। सर्वप्रथम दिवेर की शाही थाने पर (कुंभलगढ़ से ४० मील दूर) आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया, जिसका सामरिक दृष्टि से बड़ा महत्व था। इस अभियान में भामाशाह के साथ कुंवर अमर सिंह एवं ताराचन्द भी थे। दिवेर की लड़ाई की तुलना कर्नल टॉड ने 'मेराथान' के युद्ध से की है, जिसका यूरोप के इतिहास में अत्यंत महत्व है। इसके उपरान्त प्रताप का और भी अनेक जगह पुनः अधिकार हो गया। कुंभलगढ़ भी अधिकार में आ गया, पर सुरक्षा की दृष्टि से प्रताप ने चावंड को अपनी राजधानी बनाया।

इस सफलता से क्रुद्ध होकर अकबर ने पुनः शाहबाज खां को दिसंबर १५७८ ई. में दूसरी बार मेवाड़ पर आक्रमण करने हेतु भेजा। प्रताप को फिर पीछे हटना पड़ा। एक वर्ष बाद शाहबाज खां पुनः बड़ी तैयारी से आया। बार-बार के युद्ध से मेवाड़ जर्जरित हो चुका था एवं आर्थिक संकट भी गहरा गया था। इससे प्रताप के मन में भी हताशा आ गई। ऐसे समय भामाशाह ने बहुत बड़ी धनराशि प्रताप के चरणों में भेंट की, जिससे २५ हजार सैनिकों का १२ वर्षों तक का खर्च चलाया जा सकता था। भामाशाह की व्यक्तिगत सम्पत्ति का यह समर्पण इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इस धन से महाराणा प्रताप ने पुनः सैन्य एकत्र की एवं मुगल विरोधी अभियान को पूरे वेग से चलाया। यह घटना १५८० ई. के लगभग की है। इस घटना के कारण भामाशाह को इतिहास में 'मेवाड़ के उद्धारक' के रूप में स्मरण किया जाता है।

कतिपय इतिहासकारों का कथन है कि भामाशाह ने राजकोष की अन्यत्र सुरक्षित छिपाकर रखी राशि की जरूरत के समय प्रताप को समर्पित की, पर यह कथन ठीक नहीं लगता, क्योंकि उस अवस्था में इस घटना को इतनी ऐतिहासिक कीर्ति नहीं मिलती। प्रताप के त्याग, बलिदान एवं संघर्ष से सारा देश अनुप्राणित था। प्रताप मेवाड़ ही नहीं, पूरे भारत के स्वातंत्र संघर्ष का प्रतीक बना हुआ था, हिन्दू स्वाभिमान की नौका का अकेला खेवैया था। अतः भामाशाह द्वारा निजी सम्पत्ति का दान किया जाना भामाशाह के लिए भी आत्मगौरव की बात थी जो उन्होंने की, क्योंकि उनमें भी सच्ची स्वामिभक्ति एवं देशभक्ति हिलोरें ले रही थी।ऐसे देशभक्त एवं स्वामिभक्त के बल पर ही प्रताप ने १५८६ ई. तक मांडलगढ़ और चित्तौड़गढ़ को छोड़कर सम्पूर्ण मेवाड़ पर पुनर्विजय प्राप्त की।

अकबर भी उस समय उत्तरी पश्चिमी सामंतों पर अफगानों से उलझ गया। अतः मेवाड़ की ओर दृष्टि नहीं कर पाया, शायद वह विधि का विधान समझ गया हो। इसके बाद १५९७ ई. में चावंड में प्रताप के स्वर्गारोहण तक एवं बाद में अमर सिंह के राजतिलक के प्रारंभ के २-३ वर्ष तक यानि जनवरी १६०० ई. में अपनी मृत्यु पर्यंत भामाशाह मेवाड़ के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा करते रहे। वे आर्थिक दृष्टि से तो उदार थे ही अतः मुक्त हस्त से चारणों, कवियों एवं प्रजा के जरूरतमंदों की सहायता करते रहते थे। धार्मिक दृष्टि से भी उदार थे। सभी सम्प्रदाय के मंदिरों का उन्होंने जीर्णोद्धार कराया जो मुगल आक्रमण के कारण ध्वस्त हो गए थे। ऐसे शूरवीर, योग्य प्रशासक एवं मेवाड़ के सच्चा उद्धारक, स्वामिभक्त, राष्ट्रभक्त को हमारा शत-शत नमन।

आदि काल से स्वतंत्रता के प्रति समाज का मानस आकर्षित रहा है। सन् १९९६ में सम्मेलन की हीरक जयन्ती के अवसर पर तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने कहा था- स्वतंत्रता आन्दोलन के समय अनेक मारवाड़ी युवकों ने क्रान्तिकारियों की मदद की। मारवाड़ी महिलाएं भी पीछे नहीं रहीं। बंगाल के प्रमुख अधिकारी ने वायसराय के प्रतिनिधी को लिखा था- ''यदि महात्मा गाँधी के आन्दोलन से मारवाड़ी व्यापारियों को अलग कर दिया जाये तो नब्बे प्रतिशत आन्दोलन अपने आप समाप्त हो सकता है।''

युग पथ चरण

नागपुर : श्री रमेश चंद्र बंग का सम्मान

१३ जून २००४ को महाराष्ट्र प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश चंद्र गोपीकिशन बंग का उनके ६०वें जन्म दिवस के अवसर पर उनके निवास पर उन्हें सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप श्री बंग को शॉल, मारवाड़ी पगड़ी, नारियल एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान किया गया। इस अवसर पर उपस्थित थे सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री मोहन लाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री राम अवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष हरि प्रसाद कानोड़िया, ओम प्रकाश पोद्दार, रविन्द्र लड़िया, अरुण गुप्ता, प्रेम सुरेलिया, सूर्यकरण सारस्वा, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष लोकनाथ डोकानियां एवं मंत्री गोपाल अग्रवाल आदि।

आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

नागपुर : श्री रमेश चन्द बंग का मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सम्मान

महाराष्ट्र प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष एवं विधायक रमेश चन्द्र बंग का उनकी षष्ठपूर्ति के अवसर पर आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सम्मान किया गया।

आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग ने ''साझा'', हार एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर श्री रमेश चन्द्र बंग का सम्मान किया। श्री बंग महाराष्ट्र की राजनीति में अपना विशेष स्थान रखते हुए सामाजिक गतिविधियों में पूर्णतया सक्रिय हैं। उनकी षष्ठपूर्ति के अवसर पर बड़ी संख्या में राजनेता और सम्मेलन के कार्यकर्ता उपस्थित थे। आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से आनन्द प्रकाश डालिया और रामप्रकाश भण्डारी समारोह में सम्मिलित हुए।

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश चंद्र बंग की षष्ठी पूर्ति के अवसर पर स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग, राम प्रकाश भंडारी, आनंद प्रकाश डालिया एवं अन्य

मध्य प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

जबलपुर : नर्मदा नर्सरी व माहेश्वरी विद्या निकेतन, जबलपुर की बाल प्रतिभाएँ व संस्थापक मुकुन्ददास माहेश्वरी सम्मानित

पिछले लगभग बीस वर्षों से प्रावीण्य सूची में सम्मानपूर्ण स्थान अर्जित करने वाले लोकप्रिय शिक्षा संस्था- नर्मदा नर्सरी व माहेश्वरी विद्या निकेतन, जबलपुर (म.प्र.) के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने इस शिक्षा सत्र में भी अपनी गौरवशाली परंपरा को कायम रखा है। इस वर्ष कक्षा पांचवीं की कुमारी मोनिका गुप्ता, आठवीं के श्री शिरीष मातेले तथा दसवीं की कुमारी प्रीति सिंह एवं कुमारी प्रियंका कोष्टा ने बोर्ड की परीक्षाओं में प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त कर विद्यालय तथा नगर को गौरवान्वित किया है। प्रावीण्य सूची ही नहीं शैक्षणिक जगत की विभिन्न प्रतियोगिताओं में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त करनेवाली इस बाल प्रतिभाओं तथा संस्थान के संस्थापक व कुशल संचालन श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी का अभिनंदन एक गरिमामय प्रतिभा सम्मान समारोह में म.प्र. विधान सभा के अध्यक्ष श्री ईश्वरदास रोहाणी ने श्री अंचल सोनकर विधायक की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में किया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

जूनागढ़- आध्यात्मिक प्रवचन सभा

१४ जून २००६। जूनागढ़ मारवाड़ी महिला समिति एवं माँ गायत्री परिवार ट्रस्ट के मिलित सौजन्य से दो दिवसीय आध्यात्मिक प्रवचन सभा का आयोजन किया गया। स्वामी चिदानन्द ब्रह्मचारी ने कर्म की महत्ता पर बल देते हुए कहा कि कर्म ही धर्म के समान है। अच्छे कर्म का सुचारू रूप से पालन करना ही वास्तविक धार्मिकता है।

अपने इक्कीस दिनों की इस यात्रा में स्वामी जी ने कालाहांडी में जहाँ-जहाँ धार्मिक सभाओं में भाग लिया वहाँ-वहाँ हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। गायत्री परिवार ट्रस्ट और मारवाड़ी महिला समिति के सौजन्य से सम्पन्न इस कार्यक्रम में जूनागढ़ के भूतपूर्व विधायक श्री महेश्वर बराड, श्री वेदप्रकाश गोयल, ट्रस्ट अध्यक्ष लायन माणिकचंद अग्रवाल बुद्धिजीवी श्री अच्युतानन्द, आदित्य पण्डा रामावतार बंसल एवं मारवाड़ी महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल, सलाहकार कान्ता देवी बंसल उपस्थित रहीं।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

मोतीपुर : संगोष्ठी, नेत्र जाँच शिविर, निरामिष दिवस, पृथ्वी दिवस आदि कार्यक्रम आयोजित

२ अप्रैल। मोतीपुर मारवाड़ी युवा मंच के तत्वावधान में वृक्ष का जीवन में महत्व विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया एवं निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। वक्ताओं ने बताया कि वृक्ष के कटने का परिणाम है वर्षा का अभाव। अत: सभी ने वृक्षारोपण का निर्णय लिया।

इसी दिन मंच द्वार नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया जिसमें १५० व्यक्तियों को नेत्र परीक्षण किया गया जिसमें पाये गये १० मोतियाबिन्द के रोगियों को प्रान्तीय सचिव चौधरी संजय अग्रवाल द्वारा नि:शुल्क आपरेशन करवाने का आश्वासन दिया गया।

११ अप्रैल को मंच के तत्वावधान में निरामिष दिवस मनाया गया। वक्ताओं ने शाकाहार को स्वास्थ्य के लिए लाभदायक बताते हुए जीओ और जीने दो के सिद्धान्त को अपनाने का आह्वान किया।

१४ अप्रैल को नेत्रजागरुकता अभियान के तहत १२५ लोगों के नेत्रों की मुफ्त जांच की गयी जिसमें पाये गये १८ मोतियाबिन्द के रोगियों को मुफ्त आपरेशन की घोषणा की गयी।

२२ अप्रैल को मंच द्वारा आयोजित पृथ्वी दिवस के अवसर पर ''वृक्ष लगाओ पृथ्वी बचाओ'' का नारा देते हुए पर्यावरण क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी संजय अग्रवाल ने कहा कि पृथ्वी पर जल की समस्या बढ़ती जा रही है। जंगलों की अंधाधुंध कटाई से ग्लोबल वार्मिंग बढ़ता जा रहा है। इस अवसर पर हरियाली पृथ्वी चित्रांकन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं छात्र-छात्राओं द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया।

२५ अप्रैल को कांटी में मंच द्वारा एक और नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें २०० से अधिक नेत्र रोगियों की जांच की गयी और मुफ्त दवा दी गयी। इसमें मिले मोतियाबिन्द के ३५ रोगियों का आपरेशन करवाने की घोषणा की गयी।

उक्त कार्यक्रमों में योगदान देनेवालों में थे संसर्ग के अनिल कुमार, सुनील कुमार, सुमन नाथानी, कामिनी कुमारी, पर्यावरण क्लब के सर्वश्री विनय किशोर सिंह, हरिनंदन राय, संजय कुमार, बिन्दु कुमारी, सुनीता कुमारी आदि।

कोलकाता : मारवाड़ी युवा मंच द्वारा कोपी वितरण

१८ जून २००६। मारवाड़ी युवा मंच की कोलकाता शाखा द्वारा जय मातादी संघ के साथ मिलकर रविन्द्रकानन मैदान के पास स्कूली छात्र एवं छात्राओं के बीच कोपी व पेन का वितरण किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय विधायक श्री जीवन प्रकाश साहा, पार्षद श्री अरूण अधिकारी, उप-मेयर श्री कल्याण मुखर्जी एवं मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. संजय अग्रवाल एवं कोलकाता शाखा के अध्यक्ष अनिल डालमिया, सचिव अनूप साँगानेरिया, कोषाध्यक्ष निर्मल चौधरी, सज्जन बेरीवाल, राजाराम बंक एवं श्रीमती राधा भट्टर एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अन्य संस्थाएं

जोधपुर : लक्ष्मीदेवी मून्दड़ा पब्लिक विद्यालय एवं विज्ञान संकाय भवन का शिलान्यास

२२ फरवरी। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अन्यतम सहयोगी श्री जगदीश चन्द एन. मून्दड़ा ने अंग्रेजी माध्यम से छात्राओं के लिए हायर सेकेंडरी तक की शिक्षा हेतु २५ लाख रुपये का सहयोग देकर अपनी माताजी के नाम से 'लक्ष्मी देवी मून्दड़ा पब्लिक विद्यालय' का शिलान्यास किया। समारोह में उल्लेखनीय संख्या में समाज के प्रबुद्ध एवं विशिष्ट गणमान्य उपस्थित थे। इस अवसर पर श्रीमती लक्ष्मी देवी मून्दड़ा को दुशाला ओढ़ाकर एवं माल्य विभूषित कर स्वागत किया।

२३ अप्रैल को एक अन्य कार्यक्रम में श्री मून्दड़ा ने श्री नृसिंहदास मून्दड़ा माहेश्वरी भवन के नवनिर्मित प्रथमतल के लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता की। यह भवन आपके पिताजी के नाम पर बना है। इसके लिए आपने समाज को जमीन प्रदान की। इस अवसर पर समाज के विशिष्ट प्रबुद्धजनों की उपस्थिति में श्री माहेश्वरी समाज समिति, जोधपुर ने आपको 'भामाशाह सम्मान' देकर सम्मानित किया।

जमशेदपुर : कुरजां का लोकार्पण

२३ मई। राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद की ओर से द्विभाषिक पत्रिका ''कुरजां'' के प्रवेशांक का लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि श्री राजकुमार अग्रवाल ने कहा कि यह पत्रिका भाषा व संस्कृति को बढ़ावा देने में कामयाब होगी. मुख्य वक्ता व साहित्यकार डा. बच्चन पाठक 'सलिल' ने कहा कि राजस्थानी एक समृद्ध भाषा है और इसकी सांस्कृतिक जड़ें काफी मजबूत हैं। फिर भी देश भर में सबसे अधिक बोली जाने वाली राजस्थानी व भोजपुरी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया गया है। समारोह के मुख्य वक्ता श्री रतन जोशी ने कहा कि भाषा तो समाज की पूंजी है, जिसकी अधिक से अधिक हिफाजत करनी है। लोग अपनी भाषा का इस्तेमाल करने में भी कंजूसी करते हैं, यह ठीक नहीं है। उन्होंने सुझाव दिया कि पत्रिका में समाज के पुरखों और सामाजिक सेवा करने वाली संस्थाओं के साथ-साथ महिलाओं को भी स्थान दिया जाए।

पत्रिका के संपादक संस्था के अध्यक्ष डा. मनोहर लाल गोयल ने जानकारी दी कि 'कुरजां' में शहर, झारखंड राज्य, राजस्थान की खबरों के साथ-साथ इन भाषाओं की मिठास भी पढ़ने को मिलेगी। पांच अंकों के बाद छठा अंक विशेषांक होगा, जिसका प्रकाशन राजस्थान दिवस पर किया जाएगा। इस मौके पर काव्य गोष्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसमें डा. शांति सुमन सर्वश्री प्रतिभा प्रसाद, श्यामल सुमन, नरेश अग्रवाल, डा. बच्चन पाठक 'सलिल', डा. मनोहर लाल गोयल ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम का संचालन श्री हरिशंकर संघी व धन्यवाद ज्ञापन श्री धर्मचंद्र पोद्दार ने किया।

हैदराबाद : राजस्थानी स्नातक संघ का रोस्टर लोकार्पित

राजस्थानी स्नातक संघ द्वारा संघ के आबिड्स स्थित भवन में संघ के चतुर्थ रोस्टर का लोकार्पण किया गया।

समारोह में राज्य सहकारिता विभाग के आयुक्त एवं आन्ध्र प्रदेश सहकारी समिति के सचिव जे.सी. शर्मा तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी श्रीमती नीतू प्रसाद मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं।

रोस्टर समिति के समन्वयकर्ता सम्पत दरक ने अतिथियों का परिचय दिया एवं समिति के चेयरमैन रमेश कुमार बंग ने अतिथियों का स्वागत किया।

रोस्टर २००६ का विमोचन करते हुए आईएएस जे सी शर्मा, आईएएस श्रीमती नीतू प्रसाद, रोस्टर कमेटी के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग, पुष्पा बुब, सम्पत बियानी एवं सम्पत दरख।

मुख्य अतिथि जे.सी. शर्मा ने ''शहर की सफाई में जनता के योगदान'' विषय पर प्रकाश डाला, श्रीमती नीतू प्रसाद ने पर्यटन के क्षेत्र में उद्योग की संभावनाओं की जानकारी दी। संघ के मंत्री सम्पत बियाणी ने संघ के उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों के बारे में बताया। संघ की अध्यक्षा श्रीमती सुषमा बूब ने संघ की गतिविधियों में सक्रिय सहयोग देने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मान किया। श्रीमती ममता हेड़ा को लेडी ऑफ द ईयर, श्री रामगोपाल गोयनका को बेस्ट पर्सन ऑफ द ईयर एवं श्रीमती उर्मिला एवं श्री विजय कुमार टावरी को कपल ऑफ द ईयर चुना गया। रोस्टर प्रकाशन में विशेष सहयोग के लिए भवेश ऐड्स के सह-प्रबंधक पवन चाण्डक, आनन्द चाण्डक एवं अनूप चाण्डक को भी सम्मानित किया गया।

कोलकाता : आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला

७ मई। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा ''आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला'' का आयोजन किया गया जिसमें लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य डा. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने प्रथम व्याख्यान की प्रस्तुति में कहा कि आचार्य शास्त्री ओजस्विता एवं तेजस्विता के विरल पुरुष थे। उन्होंने अपनी वाणी एवं आचरण में ''स्व'' को उतार कर अपूर्व ओजस्विता एवं तेजस्विता प्राप्त की। डा. दीक्षित ने हिन्दी कविता की विविध भंगिमाओं में उसकी तेजस्विता की चर्चा की एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के विभिन्न कवियों की कविताओं का उद्धरण प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र में डा. शिव ओम अम्बर ने अपनी रचनाओं एवं भक्ति, श्रृंगार तथा सामयिक प्रसंगों पर प्रभावी टिप्पणियां सुनायी।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. कृष्ण बिहारी मिश्र ने आचार्य शास्त्री के निष्कलुष एवं अनुकरणीय चरित्र के विविध प्रसंगों को उद्घाटित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वन्दना से हुई। पुस्तकालय के अध्यक्ष डा. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की और प्रथम सत्र का संचालन किया। द्वितीय सत्र का संचालन किया श्री विमल लाठ ने। धन्यवाद ज्ञापन सैय्यद महफूज हसन रिजवी 'पुण्डरीक' ने किया।

व्याख्यानमाला की सफलता के लिए कर्नाटक के महामहिम राज्यपाल श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी, डा. प्रभाकर श्रोत्रिय एवं प्रो. कल्याणमल लोढ़ा के शुभकामना संदेशों का पाठ किया साहित्यमंत्री डा. उषा द्विवेदी ने। मंच पर अतिथियों के साथ उपस्थित थे श्री जुगलकिशोर जैथलिया एवं श्री महावीर बजाज। अतिथियों का स्वागत श्री घनश्यामदास बेरीवाल एवं श्री दुर्गादत्त सिंह ने किया। कार्यक्रम में विशाल संख्या में महानगर के विशिष्टजन उपस्थित थे।

कोलकाता : महाराणा प्रताप जयन्ती पर सेठिया समग्र का लोकार्पण

१ जून २००६। राजस्थान परिषद द्वारा आयोजित महाराणा प्रताप जन्म जयन्ती समारोह के अवसर पर परिषद द्वारा प्रकाशित 'कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिन्दी-२)'' के लोकार्पण उपरान्त पूर्व राज्यपाल प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद ने कहा कि महाकवि पद्मश्री कन्हैयलाल सेठिया का साहित्य इस देश की मिट्टी एवं परम्पराओं से जुड़ा हुआ, सहज, सर्वग्राही, प्रेरक एवं पुरुषार्थ का है- अत: कालजयी है।

राजस्थान परिषद ने महाकवि सेठिया के राजस्थानी, हिन्दी एवं उर्दू के सभी ३४ ग्रंथों को ३ जिल्दों में समग्र के रूप में प्रकाशित कर साहित्य की बहुत बड़ी सेवा की है। मैं परिषद एवं इस ग्रंथ के सम्पादक श्री जुगल किशोर जैथलिया को इतने उत्तम कार्य के लिए बधाई देता हूं। प्रधान वक्ता साहित्य महोपाध्याय डॉ. वासुदेव पोद्दार ने श्री सेठिया के साहित्य की तुलना विश्व के प्रसिद्ध साहित्यकारों से की। कार्यक्रम के प्रारंभ में परिषद के अध्यक्ष श्री शार्दुल सिंह जैन ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रधान अतिथि राजस्थान सरकार के सहकारिता एवं समाज कल्याण मंत्री श्री मदन दिलावर ने महाराणा प्रताप के शौर्य एवं साहस पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज एनसीआरटी पुस्तकों के माध्यम से केन्द्र सरकार हमारे इन कीर्तिमानों के यश को छोटा करने का प्रयत्न कर रही है। इसकी भर्त्सना की जानी चाहिये। नवोदित लेखिका श्रीमती तारा दूगड़ ने श्री सेठिया के काव्य जगत पर मार्मिक प्रकाश डालते हुए श्री सेठिया के साहित्य को 'लोकमंगल एवं पुरुषार्थ के साहित्य' की संज्ञा दी। 'समग्र' के सम्पादक श्री जुगल किशोर जैथलिया ने ग्रंथ की प्रथम प्रति प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद को समर्पित की, जिसका उन्होंने लोकार्पण किया। सम्पादक श्री महावीर बजाज ने ग्रंथ की प्रतियाँ अतिथियों को भेंट की। श्री जैथलिया ने महाराणा प्रताप के जीवन के कुछ अछूते प्रसंगों पर सविस्तार प्रकाश डाला। वरिष्ठ समाजसेवी श्री जतनलाल रामपुरिया ने श्री सेठिया के साहित्य पर विचार प्रकट किए एवं इसको अन्य भाषाओं में अनूदित कर आधिकारिक पाठकों तक पहुंचाने हेतु एक अलग ट्रस्ट के गठन का सुझाव दिया।

समारोह के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार एवं 'नवज्योति दैनिक' (जयपुर) के सम्पादक श्री श्याम आचार्य ने राजस्थान परिषद को बधाई दी कि समाजसेवा के साथ-साथ उसने उत्तम प्रकाशन का कार्य भी अपने हाथ में लिया है। उन्होंने महाराणा प्रताप के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंगों का सविस्तार उल्लेख किया। कार्यक्रम का संचालन श्री रूपलाल सुराणा (जैन) ने किया।

कोलकाता : भँवरलाल मल्लावत सेवा केन्द्र नि:शुल्क चिकित्सा के ५ वर्ष पूर्ण

१४ जून २००६। स्वर्गीय भँवरलाल मल्लावत की पुण्य स्मृति में ''सेवा भारती'' के नि:शुल्क एक्यूप्रेशर चिकित्सा प्रकल्प का शुभारंभ ५ वर्ष पूर्व २६ अप्रैल २००१ को स्थानीय ४२, कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट में हुआ। नगर के जाने-माने चिकित्सकों द्वारा नि:शुल्क सेवा देनेवाला यह केन्द्र सप्ताह में तीन दिन (बुधवार, शुक्रवार व रविवार) को प्रात: ९ से ११ बजे तक चलता है। इसमें अनेक असाध्य रोगों से पीड़ित लोगों को लाभ मिल रहा है। इस केन्द्र द्वारा समय-समय पर नि:शुल्क चिकित्सा शिविर, एक्यूप्रेशर-सुजोक प्रशिक्षण शिविर एवं स्वेच्छा रक्तदान शिविर लगाया जाता है। संस्था द्वारा प्रतिदिन २० से २५ रोगियों का उपचार होता है। कार्यकारिणी सदस्य श्री अरूण प्रकाश मल्लावत के अनुसार सेवा केन्द्र के अध्यक्ष श्री गणेशनारायण सुल्तानिया, उपाध्यक्ष श्री रामगोपाल सूंघा एवं मंत्री श्री सत्यनारायण खरकिया, समाजसेवी श्री जुगल किशोर जैथलिया एवं कोलकाता नगर निगम की पूर्व उपमेयर श्रीमती मीना देवी पुरोहित का मार्गदर्शन संस्था को मिलता रहता है।

Wonder Images Pvt. Ltd.
we print on
FLEX
SAV
MESH
ONE-WAY VISION
FLOOR ETCHING
UK MEDIA
LAMINATION
CANVAS
Etc.
Contact :-
22155479
22155480
9830045754
9830051410
9830425990
9830768372
9830590130
9331854244
9231699624
154, LENIN SARANI,
KOLKATA-13
2nd Floor

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06
Date of Publication- 29 JUNE 2006
RNI Regd. No. 2868/68

MACO GEL

Makesworth Industries Ltd.
"KAMALALAYACENTRE"
Suite 504, 5th Floor
156A, Lenin Sarani, Kolkata-700 013

MACO GEL is a high profile product of **Makesworth Industries Ltd. (MIL),** a part of the Makesworth group that excels in distribution of Industrial oils, rubber hoses, plastics and allied products in eastern India.

MACO GEL in its various grades is formulated by employing the most modern technology. This ensures total compatibility with cable polymers and coatings. It has excellent water blocking property as well as processibility for case and minimising down time during cable production.

The **MIL** plant located on the outskirts of Kolkata on Diamond Harbour Road, has state of the art technology and R & D facilities.

MACO GEL—THE PRODUCT

Category : Cable filling compounds. Soft pasty, hydrophyllic gel formulated from high quality base oil and other hi-tech ingredients which provide superior water blocking capacity over a wide temperature range.

Application : The ideal water resistant material for filling the interstices in Multipair Polyethylene insulated and sheathed telephone cables, ingress of moisture into cable sheath damage occurs.

Features : A homogeneous compound and containing a suitable antioxidant. Easy removal by wiping from insulated conductors.

Transparent, so does not obscure the colour identification of the polyethylene insulation.

Fully compatible with polyethylene of medium and high density.

No unpleasant odour. No toxic or dermatic hazards.

Stable without migration.

FILL LONG LIFE INTO YOUR CABLE

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,